हिन्दी दैनिक

# राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No. : MAHHIN/2008/24084. www.rashtriyaswabhimaan.com

● वर्ष : 18 ● अंक : 131 ● मुंबई, मंगलवार, 24 नवम्बर 2026 ● पृष्ठ : 4 ● मूल्य 1 रुपए

## व्हाट्सएप वेब के जरिए निजी चैट तक पहुंच बना रहे साइबर अपराधी

नई दिल्ली। डिजिटल युग में व्हाट्सएप लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुका है। निजी बातचीत से लेकर कारोबार, कार्यालय के कामकाज, जरूरी दस्तावेजों और व्यक्तिगत जानकारियों के आदान-प्रदान तक के लिए इसका व्यापक इस्तेमाल किया जा रहा है। ऐसे में व्हाट्सएप अकाउंट की सुरक्षा और निजी चैट की गोपनीयता को लेकर जरा सी लापरवाही भी बड़ी परेशानी का कारण बन सकती है। इसी खतरे को देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाले इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (आइ4सी) की नेशनल साइबरक्राइम थ्रेट एनालिटिक्स यूनिट (एनसीटीएयू) ने उपयोगकर्ताओं के लिए चेतावनी जारी की है। साइबर सुरक्षा इकाई ने आगाह किया है कि कुछ परिस्थितियों में व्हाट्सएप वेब के प्रमाणित और सक्रिय सेशन का दुरुपयोग कर किसी व्यक्ति के अकाउंट तक अनधिकृत पहुंच बनाई जा सकती है। यदि साइबर अपराधियों को किसी उपयोगकर्ता के सक्रिय सेशन तक पहुंच मिल जाती है, तो वे उसकी निजी बातचीत पढ़ने, संपर्कों की जानकारी देखने और ग्रुप में होने वाले संदेशों तक पहुंच बनाने में सक्षम हो सकते हैं। इससे व्यक्तिगत जानकारियों की गोपनीयता खतरे में पड़ने के साथ-साथ उपयोगकर्ता की डिजिटल पहचान का गलत इस्तेमाल होने की आशंका भी बढ़ जाती है।

व्हाट्सएप वेब की सुविधा के माध्यम से उपयोगकर्ता अपने मोबाइल अकाउंट को कंप्यूटर के ब्राउजर से जोड़कर संदेश पढ़ और भेज सकते हैं। कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारी, कारोबारी और अन्य लोग अक्सर कंप्यूटर पर इस सुविधा का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि इससे दस्तावेज साझा करना और संदेशों का जवाब देना आसान हो जाता है। लेकिन सुविधा के साथ सुरक्षा संबंधी जिम्मेदारी भी जुड़ी हुई है। कई बार लोग किसी दूसरे व्यक्ति के कंप्यूटर, कार्यालय के साझा सिस्टम या सार्वजनिक स्थान पर उपलब्ध उपकरण से अपना अकाउंट लॉग-इन कर लेते हैं। काम पूरा होने के बाद जल्दबाजी में ब्राउजर का टैब बंद कर देते हैं और यह मान लेते हैं कि अकाउंट भी बंद हो गया है। जबकि केवल ब्राउजर की विंडो या टैब बंद करना और व्हाट्सएप वेब से विधिवत लॉग-आउट करना अलग-अलग प्रक्रियाएं हैं। यदि सेशन सक्रिय रह जाता है और किसी दूसरे व्यक्ति को उस कंप्यूटर तक पहुंच मिल जाती है, तो वह अकाउंट का दुरुपयोग कर सकता है। इस स्थिति में मोबाइल फोन उपयोगकर्ता के पास रहने के बावजूद उसकी निजी चैट और दूसरी जानकारियां किसी अन्य व्यक्ति के सामने आ सकती हैं। एनसीटीएयू के अनुसार, किसी दूसरे व्यक्ति को व्हाट्सएप वेब सेशन



तक अनधिकृत पहुंच मिलने का खतरा केवल निजी संदेश पढ़े जाने तक सीमित नहीं है। ऐसा व्यक्ति संबंधित अकाउंट का इस्तेमाल करते हुए उपयोगकर्ता की पहचान से दूसरों को संदेश भी भेज सकता है। साइबर अपराधी इस स्थिति का फायदा उठाकर फिशिंग और सोशल इंजीनियरिंग जैसी तकनीकों के जरिए लोगों को निशाना बना सकते हैं। वे किसी परिचित के नाम से संदेश भेजकर पैसे मांग सकते हैं, संदिग्ध लिंक खोलने के लिए कह सकते हैं या व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं। चूंकि संदेश किसी जानकार व्यक्ति के वास्तविक अकाउंट से आया हुआ दिखाई देता है, इसलिए प्राप्तकर्ता के उसके झांसे में आने की आशंका अधिक रहती है। कई बार लोग परिचित के नाम से आए संदेश पर बिना पुष्टि किए भरोसा कर लेते हैं और आर्थिक लेन-देन तक कर बैठते हैं। इस तरह एक व्यक्ति के अकाउंट की सुरक्षा में हुई चूक उसके परिवार, मित्रों, सहकर्मियों और संपर्क सूची में शामिल अन्य लोगों को भी साइबर ठगी के खतरे में डाल सकती है।

साइबर सुरक्षा इकाई ने कार्यालयों, साझा कंप्यूटरों और सार्वजनिक स्थानों पर व्हाट्सएप वेब का इस्तेमाल करने वालों को विशेष रूप से सतर्क रहने की सलाह दी है। साइबर कैफे, सार्वजनिक कियोस्क, होटल के बिजनेस सेंटर और दूसरे व्यक्तियों के कंप्यूटर पर निजी अकाउंट लॉग-इन करना जोखिम भरा हो सकता है। ऐसे स्थानों पर एक ही कंप्यूटर का इस्तेमाल कई लोग करते हैं। यदि कोई उपयोगकर्ता अपना सेशन खुला छोड़ देता है, तो बाद में उसी सिस्टम का इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति उसके अकाउंट तक पहुंच सकता है। कई बार उपयोगकर्ता को यह भी पता नहीं चलता कि उसके अकाउंट का सेशन अभी सक्रिय है। इसलिए जहां तक संभव हो, सार्वजनिक और साझा कंप्यूटर पर व्हाट्सएप वेब का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। यदि किसी आवश्यक परिस्थिति में इसका उपयोग करना पड़े, तो काम समाप्त होते ही अकाउंट से पूरी तरह लॉग-आउट करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उस डिवाइस पर निजी अकाउंट खुला न रह गया हो। एनसीटीएयू ने कार्यालय, वित्तीय और संगठन से जुड़ी गोपनीय जानकारियों के आदान-प्रदान को लेकर भी सावधानी बरतने की सलाह दी है। कार्यालयों और संस्थानों में कई बार ऐसे दस्तावेज, सूचनाएं और संदेश साझा किए जाते हैं, जिनका अनधिकृत व्यक्तियों तक पहुंचना गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। यदि किसी कर्मचारी का अकाउंट साझा कंप्यूटर पर खुला रह जाता है या उसका सक्रिय सेशन किसी अन्य व्यक्ति के हाथ लग जाता है, तो व्यक्तिगत बातचीत के साथ संस्थान से जुड़ी संवेदनशील जानकारी भी जोखिम में पड़ सकती है। इसलिए संगठनों को आधिकारिक और गोपनीय कार्यों के लिए व्हाट्सएप वेब के इस्तेमाल से बचने तथा कर्मचारियों को डिजिटल सुरक्षा के प्रति जागरूक करने की जरूरत है। उपयोगकर्ताओं को भी यह समझना होगा कि किसी भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सुविधा का लाभ उठाते समय सुरक्षा नियमों की अनदेखी नहीं की जा सकती। साइबर सुरक्षा इकाई ने स्पष्ट किया है कि व्हाट्सएप वेब पर काम पूरा होने के बाद केवल ब्राउजर बंद कर देना पर्याप्त नहीं है। उपयोगकर्ता को अकाउंट से बाकायदा लॉग-आउट करना चाहिए। खासकर उस स्थिति में यह सावधानी बेहद जरूरी है, जब कंप्यूटर किसी दूसरे व्यक्ति या कार्यालय के साझा उपयोग में हो। जरूरत पड़ने पर भरोसेमंद कंप्यूटर पर ब्राउजर के प्राइवेट या इनकॉग्निटो मोड का इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन इसे पूरी सुरक्षा की गारंटी नहीं मानना चाहिए। इस मोड में भी काम समाप्त होने पर मैन्युअल रूप से लॉग-आउट करना जरूरी है। इसके अलावा उपयोगकर्ताओं को अपने अकाउंट से जुड़े उपकरणों की सूची समय-समय पर जांचते रहना चाहिए। यदि कोई ऐसा डिवाइस दिखाई देता है, जिसे वे पहचानते नहीं हैं या जिसका इस्तेमाल अब नहीं करते, तो उससे सेशन समाप्त कर देना चाहिए। कंप्यूटर और ब्राउजर की सुरक्षा को मजबूत बनाए रखना भी इस खतरे से बचाव का महत्वपूर्ण हिस्सा है। एनसीटीएयू ने ऑपरेटिंग सिस्टम, इंटरनेट ब्राउजर और सुरक्षा सॉफ्टवेयर को नियमित रूप से अपडेट रखने की सलाह दी है। पुराने सॉफ्टवेयर में मौजूद सुरक्षा कमजोरियों का फायदा साइबर अपराधी उठा सकते हैं। इसके साथ ही अनजान फाइलों को खोलने, संदिग्ध वेबसाइटों से सामग्री डाउनलोड करने और अपरिचित स्रोतों से मिले लिंक पर क्लिक करने से बचना चाहिए। कई बार साइबर अपराधी आकर्षक संदेश, जरूरी दस्तावेज या किसी परिचित के नाम से फाइल भेजकर उपयोगकर्ता को उसे खोलने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे संदेशों और फाइलों की विश्वसनीयता जांचे बिना उन पर कार्रवाई करना नुकसानदेह हो सकता है। इसलिए किसी भी संदिग्ध सामग्री को डाउनलोड करने या खोलने से पहले उसके स्रोत की पुष्टि करना जरूरी है।

यदि किसी उपयोगकर्ता को पता चलता है कि उसके व्हाट्सएप अकाउंट से ऐसे संदेश भेजे जा रहे हैं, जिन्हें उसने स्वयं नहीं भेजा है, तो उसे इसे सामान्य तकनीकी समस्या मानकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। इसी तरह यदि परिचित लोग किसी अजीब संदेश, पैसे की मांग या संदिग्ध लिंक के बारे में पूछते हैं, तो तुरंत अकाउंट की सुरक्षा जांचनी चाहिए। व्हाट्सएप के लिंक्ड डिवाइस की सूची में जाकर सक्रिय सेशन की जानकारी देखनी चाहिए और किसी अनजान डिवाइस का नाम दिखाई देने पर उसे लॉग-आउट कर देना चाहिए। जिन संपर्कों को संदिग्ध संदेश भेजे गए हों, उन्हें किसी दूसरे विश्वसनीय माध्यम से इसकी जानकारी देकर सावधान करना चाहिए, ताकि वे किसी लिंक पर क्लिक न करें और पैसे या निजी जानकारी साझा करने से बचें। यदि इस तरह की गतिविधि के कारण किसी के साथ आर्थिक धोखाधड़ी होती है, तो उसे तत्काल साइबर अपराध की शिकायत दर्ज कराने के लिए आधिकारिक माध्यमों का उपयोग करना चाहिए।

डिजिटल संचार के बढ़ते इस्तेमाल के साथ साइबर अपराधियों के तरीके भी लगातार बदल रहे हैं। अब खतरा केवल मोबाइल फोन चोरी होने या पासवर्ड हासिल किए जाने तक सीमित नहीं है, बल्कि किसी कंप्यूटर पर सक्रिय रह गए अकाउंट सेशन का दुरुपयोग भी निजी जानकारियों और डिजिटल पहचान को खतरे में डाल सकता है। गृह मंत्रालय के साइबर सुरक्षा केंद्र की चेतावनी इसी जोखिम के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण है। व्हाट्सएप पर निजी बातचीत सुरक्षित रखने के लिए केवल मजबूत सुरक्षा व्यवस्था पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उपयोगकर्ता को भी सतर्क रहना होगा। अनजान और सार्वजनिक कंप्यूटर पर अकाउंट लॉग-इन करने से बचना, काम पूरा होने के बाद विधिवत लॉग-आउट करना, जुड़े हुए उपकरणों की नियमित जांच करना और संदिग्ध संदेशों से सावधान रहना जरूरी है। थोड़ी सी सतर्कता न केवल निजी चैट को सुरक्षित रख सकती है, बल्कि आपकी पहचान का इस्तेमाल कर दूसरों के साथ होने वाली संभावित ठगी को भी रोकने में मददगार साबित हो सकती है।

## महाराष्ट्र में भूदान जमीनों के कथित घोटाले की होगी जांच

मुंबई। महाराष्ट्र में भूदान और ग्रामदान आंदोलन के तहत दान की गई जमीनों के कथित दुरुपयोग और अनियमितताओं की जांच कराई जाएगी। राज्य के राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले ने सोमवार को इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि भूदान आंदोलन के उद्देश्य से किसानों को दी गई जमीन पर उन्हीं का अधिकार रहेगा और ऐसी जमीनों को बिल्डरों को बेचा या हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। हालांकि, राज्य के कुछ क्षेत्रों से इन जमीनों के दुरुपयोग की शिकायतें सामने आई हैं, जिनकी जांच आवश्यक है। इससे पहले शिवसेना (यूबीटी) के नेता अंबादास दानवे ने भूदान और ग्रामदान की जमीनों



में बड़े पैमाने पर कथित गड़बड़ी का आरोप लगाते हुए मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखा था। उन्होंने पूरे मामले की विशेष जांच दल (एसआईटी) से जांच कराने और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी।

बावनकुले ने स्पष्ट किया कि भूदान आंदोलन के दौरान भूमिहीन और जरूरतमंद किसानों को उपलब्ध कराई गई जमीन का उद्देश्य उन्हें आजीविका का साधन देना था। इसलिए ऐसी जमीनों का इस्तेमाल मूल उद्देश्य से अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि भूदान के तहत किसानों को मिली जमीन पर उनका ही मालिकाना हक रहेगा और उसे बिल्डरों को बेचना या देना उचित नहीं है। राजस्व मंत्री ने स्वीकार किया कि कुछ स्थानों पर भूदान की जमीनों के गलत इस्तेमाल और अनियमितताओं को लेकर शिकायतें मिली हैं। विशेष रूप से शहरों की सीमा में शामिल हो चुकी भूदान जमीनों की स्थिति की जांच किए जाने की जरूरत है। उन्होंने यह भी बताया कि भूदान महामंडल के कामकाज को प्रभावी बनाने और जमीनों के संरक्षण के लिए एक कारगर कानून लाने की दिशा में काम किया जा रहा है।

अंबादास दानवे ने रविवार को मुख्यमंत्री को भेजे पत्र में आरोप लगाया था कि महाराष्ट्र में करीब 2.5 लाख एकड़ दान की गई जमीनों के मालिकाना हक, प्रबंधन और हस्तांतरण की प्रक्रिया में गंभीर अनियमितताएं हुई हैं। उनके अनुसार, इन जमीनों के गैरकानूनी हस्तांतरण, अधिग्रहण के मुआवजे के निर्धारण, अवैध खनिज निकासी और राजस्व रिकॉर्ड में कथित हेरफेर जैसे मामले सामने आए हैं।

## हवा से बातें करने को तैयार देश की पहली बुलेट ट्रेन

अहमदाबाद। देश में हाई-स्पीड रेल के नए युग की शुरुआत की तैयारियां तेज हो गई हैं। मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के तहत अब पहली बार ट्रेन को ट्रैक पर दौड़ाकर उसकी गति और तकनीकी व्यवस्थाओं का परीक्षण करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। योजना के अनुसार, मई 2027 में गुजरात के सूरत से बिलिमोरा के बीच लगभग 50 किलोमीटर लंबे रेलखंड पर देश की पहली बुलेट ट्रेन का ट्रायल किया जाएगा। इस परीक्षण के लिए बी-28 ट्रेन सेट का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसे अधिकतम 280 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलाने के लिए तैयार किया गया है। रेल मंत्री ने यह जानकारी देते हुए बताया कि परियोजना को चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ाया जा रहा है और पहले परीक्षण के लिए जरूरी बुनियादी ढांचे को तैयार करने का काम तेजी से चल रहा है। यह ट्रायल भारतीय रेल के लिए तकनीकी और परिचालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण पड़ाव होगा, क्योंकि इसके माध्यम से देश में पहली बार इतनी तेज गति वाली ट्रेन के संचालन से जुड़ी व्यवस्थाओं को परखा जाएगा।

सूरत-बिलिमोरा रेलखंड को इस महत्वाकांक्षी परियोजना के पहले परीक्षण क्षेत्र के रूप में तैयार किया जा रहा है। करीब 50 किलोमीटर लंबे इस एलिवेटेड ट्रैक पर बिजली से जुड़ा काम पूरा हो चुका है। अब सिग्नलिंग व्यवस्था को अंतिम रूप देने की तैयारी है, जिसे जनवरी 2027 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, हाई-स्पीड ट्रेन के सुरक्षित संचालन के लिए केवल मजबूत ट्रैक और आधुनिक ट्रेन सेट ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि बिजली आपूर्ति, सिग्नलिंग, संचार और नियंत्रण प्रणाली का भी निर्धारित मानकों के अनुरूप काम करना जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए परियोजना के प्रत्येक तकनीकी हिस्से को चरणबद्ध ढंग से तैयार किया जा रहा है। मई 2027 में प्रस्तावित ट्रायल से पहले इन सभी व्यवस्थाओं की जांच और परीक्षण किया जाएगा। इस रेलखंड पर बिजली आपूर्ति की दिशा में 20 नवंबर 2026 को महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हुई, जब एलिवेटेड ट्रैक की अप और डाउन दोनों लाइनों पर ओवरहेड इक्विपमेंट (ओएचई) को चालू कर दिया गया। इसके साथ ही दोनों दिशाओं में ट्रेन संचालन के लिए बिजली आपूर्ति से जुड़ी व्यवस्था ने काम करना शुरू कर दिया है। पूरे मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर में तेज रफ्तार ट्रेनों को पर्याप्त और निरंतर बिजली उपलब्ध कराने के लिए 2 गुणा 25 केवी ट्रैक्शन सिस्टम लगाया गया है। इस प्रणाली के माध्यम से हाई-स्पीड ट्रेन की ऊर्जा संबंधी जरूरतों को पूरा करने की व्यवस्था की गई है। इसके लिए बिलिमोरा में ट्रैक्शन सब-स्टेशन भी स्थापित किया गया है। इतनी अधिक गति से चलने वाली ट्रेन के संचालन में बिजली आपूर्ति की स्थिरता बेहद महत्वपूर्ण होती है।

## बीएमसी की सावधि जमा में 11,817 करोड़ रुपये की भारी गिरावट

मुंबई। देश की सबसे समृद्ध महानगरपालिकाओं में शामिल बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) की सावधि जमा (एफडी) में लगातार हो रही कमी को लेकर राजनीतिक सवाल उठने लगे हैं। महानगरपालिका के वित्तीय प्रबंधन और भविष्य की विकास योजनाओं के लिए धन की उपलब्धता को लेकर कांग्रेस ने प्रशासन से विस्तृत जवाब मांगा है। कांग्रेस के समूह नेता अशरफ आज़मी ने बीएमसी आयुक्त अश्विनी भिड़े को पत्र लिखकर सितंबर 2026 तक की सावधि जमा की स्थिति और उसमें से निकाली गई रकम के इस्तेमाल पर श्वेतपत्र जारी करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि महानगरपालिका की एफडी में जमा धन मुंबई के नागरिकों की संपत्ति है। इसलिए इस रकम को किन कार्यों पर खर्च किया गया, किस परियोजना में कितना पैसा लगाया गया और खर्च की मंजूरी किस स्तर पर दी गई, इसकी पूरी जानकारी सार्वजनिक होनी चाहिए। अशरफ आज़मी के अनुसार, वर्ष 2021 में बीएमसी की कुल सावधि जमा 91,690 करोड़ रुपये थी, जो अक्टूबर 2026 में घटकर 79,873 करोड़ रुपये रह गई। इस तरह पिछले कुछ वर्षों में एफडी में कुल 11,817 करोड़ रुपये की कमी दर्ज की गई है। उन्होंने मार्च 2026 के आंकड़ों का भी उल्लेख किया, जब महानगरपालिका की



एफडी घटकर 77,905 करोड़ रुपये तक पहुंच गई थी। यह वर्ष 2021 की तुलना में 13,785 करोड़ रुपये कम थी। आज़मी ने इन आंकड़ों को आधार बनाते हुए महानगरपालिका प्रशासन से सवाल किया है कि इतनी बड़ी रकम किन मदों में खर्च की गई और इसके पीछे क्या वित्तीय योजना रही। उनका कहना है कि एफडी में आई गिरावट को केवल आंकड़ों के रूप में नहीं देखा जा सकता, क्योंकि महानगरपालिका की आर्थिक स्थिति का सीधा संबंध शहर के विकास और नागरिक सुविधाओं से है।

कांग्रेस नेता ने अपने पत्र में मांग की है कि प्रशासन श्वेतपत्र के माध्यम से एफडी से निकाली गई कुल रकम का विस्तृत हिसाब पेश करे। इसमें यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि किस अवधि में कितनी राशि निकाली गई, उसे किन परियोजनाओं और विकास कार्यों पर खर्च किया गया तथा संबंधित खर्चों को किन अधिकारियों ने मंजूरी दी। उन्होंने परियोजनावार और मदवार खर्च का विवरण सार्वजनिक करने पर जोर दिया है, ताकि नागरिकों और जनप्रतिनिधियों को यह समझने का अवसर मिले कि महानगरपालिका की जमा पूंजी का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जा रहा है। इसके साथ ही भविष्य में एफडी से रकम निकालने की क्या योजना है और महानगरपालिका अपने वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन किस तरह करेगी, इसका भी स्पष्ट ब्योरा मांगा गया है।

आज़मी ने बीएमसी की करीब 2.44 लाख करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं को लेकर भी चिंता जताई है। उनका सवाल है कि आने वाले वर्षों में इन सभी परियोजनाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक धन कहां से जुटाया जाएगा। यदि महानगरपालिका की सावधि जमा में लगातार कमी आती रही, तो भविष्य की योजनाओं के लिए वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने की चुनौती बढ़ सकती है। उन्होंने आशंका जताई कि विकास परियोजनाओं के लिए धन जुटाने की प्रक्रिया में मुंबई की बुनियादी नागरिक सुविधाओं के बजट पर असर नहीं पड़ना चाहिए। शहर में पानी की आपूर्ति, स्वच्छता व्यवस्था, सड़कों का रखरखाव, सार्वजनिक शौचालय, अस्पतालों और महानगरपालिका स्कूलों जैसी आवश्यक सेवाओं के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध रहना जरूरी है। इन सुविधाओं से प्रतिदिन लाखों नागरिकों का जीवन जुड़ा हुआ है, इसलिए वित्तीय प्रबंधन के नाम पर इनके कामकाज और विकास को प्रभावित नहीं किया जाना चाहिए।

कांग्रेस नेता ने महानगरपालिका की जमीनों और अस्पतालों को अन्य संस्थाओं या निजी पक्षों को सौंपने की प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने मांग की है कि खर्चों की भरपाई के लिए बीएमसी की संपत्तियों को हस्तांतरित करने या अन्य संस्थाओं को सौंपने की प्रक्रिया तत्काल रोकी जाए। उनका कहना है कि महानगरपालिका की जमीन, अस्पताल और अन्य संपत्तियां सार्वजनिक संसाधन हैं। इनका इस्तेमाल किसी भी परिस्थिति में पारदर्शी और जनहित को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिए। यदि महानगरपालिका को वित्तीय संसाधनों की जरूरत है, तो इसके लिए पहले आय-व्यय का पूरा आकलन और उपलब्ध विकल्पों पर विचार किया जाना चाहिए। शहर की मूल्यवान संपत्तियों से जुड़े फैसले बिना पर्याप्त जानकारी और पारदर्शिता के नहीं लिए जाने चाहिए। आज़मी ने यह भी कहा कि बीएमसी की सावधि जमा में रखी गई रकम मुंबईकरों की मेहनत और शहर के वित्तीय संसाधनों से जुड़ी है। इसलिए प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वह इसके इस्तेमाल का पूरा हिसाब जनता के सामने रखे। उन्होंने उम्मीद जताई कि आगामी स्थायी समिति की बैठक से पहले आयुक्त अश्विनी भिड़े श्वेतपत्र प्रस्तुत करेंगी, ताकि एफडी में आई कमी, निकाली गई रकम और उसके उपयोग को लेकर स्थिति स्पष्ट हो सके। उनके मुताबिक, वित्तीय मामलों में पारदर्शिता से ही महानगरपालिका के कामकाज पर नागरिकों का भरोसा मजबूत होगा। अब इस मांग पर बीएमसी प्रशासन का रुख महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि एफडी में कमी और करीब 2.44 लाख करोड़ रुपये की परियोजनाओं के लिए धन जुटाने का सवाल महानगरपालिका के भविष्य के वित्तीय प्रबंधन से सीधे जुड़ा हुआ है।

## आदिवासियों की जमीन पर नार्वेकर का कब्जा, राऊत ने लगाए गंभीर आरोप

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में आदिवासियों की जमीन और उनके पुनर्वास का मामला विवाद का विषय बन गया है। शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राऊत ने विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर पर अलीबाग क्षेत्र में आदिवासी परिवारों की जमीन पर कब्जा करने का गंभीर आरोप लगाया है। उन्होंने इस मामले में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखकर निष्पक्ष जांच कराने और दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। राऊत का दावा है कि रायगढ़ जिले के अलीबाग स्थित म्हात्रोली गांव की कातकरी आदिवासी बस्ती में पीढ़ियों से रह रहे करीब 20 परिवारों के घर वर्ष 2024 में तोड़ दिए गए थे। उन्होंने आरोप लगाया कि जिस जमीन पर ये परिवार लंबे समय से रह रहे थे, उसे फरवरी 2024 में विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर की पत्नी सरोजिनी के नाम पर खरीदा गया था। इस मामले को लेकर अब राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तेज हो गए हैं। हालांकि, राहुल नार्वेकर ने इन आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए जमीन के स्वामित्व और परिवारों के पुनर्वास को लेकर अपना पक्ष रखा है।

संजय राऊत के अनुसार, म्हात्रोली गांव की गट क्रमांक 148/1 में स्थित करीब 15 एकड़ जमीन को लेकर विवाद है। उनका आरोप है कि इस जमीन पर कातकरी समुदाय के लगभग 20 परिवार पीढ़ियों से निवास कर रहे थे। फरवरी 2024 में यह जमीन विधानसभा अध्यक्ष की पत्नी सरोजिनी नार्वेकर के नाम पर खरीदी गई। इसके बाद आदिवासी परिवारों को वहां से हटाने की कार्रवाई की गई। राऊत ने दावा किया कि जेसीबी मशीनों की मदद से परिवारों के घर, घरेलू सामान और बोरवेल तक तोड़ दिए गए तथा लोगों को उनके पारंपरिक निवास स्थान से बेदखल कर दिया गया। उन्होंने इस कार्रवाई को आदिवासी समुदाय के अधिकारों और उनके साथ न्याय के सवाल से जोड़ते हुए गंभीर चिंता जताई है। राऊत ने मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में मांग की है कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाए और यदि आदिवासी परिवारों के साथ अन्याय या गैरकानूनी कार्रवाई हुई है, तो संबंधित लोगों के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएं। उन्होंने मामले में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत कार्रवाई की मांग भी की है। इसके अलावा बेदखल किए गए परिवारों के पुनर्वास, उनके साथ हुई कार्रवाई की परिस्थितियों की जांच और इसमें शामिल अधिकारियों की भूमिका तय करने की मांग उठाई है। उनका कहना है कि जिन परिवारों का जीवन और आश्रय इस कार्रवाई से प्रभावित हुआ है, उन्हें न्याय और सुरक्षित आवास उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

दूसरी ओर, विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने संजय राऊत के आरोपों को निराधार बताते हुए उनका खंडन किया है। नार्वेकर का कहना है कि विवादित जमीन आदिवासियों की नहीं है, बल्कि राजस्व अभिलेखों में इसे भोगवटा क्रमांक एक की जमीन के रूप में दर्ज किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि वर्ष 2024 तक इस मामले में प्रशासन के पास दर्ज शिकायतों में उनके परिवार का नाम शामिल नहीं था। नार्वेकर ने अपने पक्ष में मानवाधिकार आयोग में की गई शिकायत के बाद प्रशासन की ओर से कराई गई जांच और तैयार रिपोर्ट का हवाला दिया है। उनके अनुसार, इस मामले में प्रशासन ने प्रभावित परिवारों के पुनर्वास के लिए कदम उठाए थे और उन्हें दूसरी जगह रहने की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई थी। नार्वेकर के मुताबिक, प्रशासनिक रिपोर्ट में 19 आदिवासी परिवारों के पुनर्वास का उल्लेख है। इन परिवारों के लिए दूसरी जगह 19 कमरों के मकान बनाने की व्यवस्था की गई थी।

## संपादकीय

# सफाई के दावों पर सुप्रीम सवाल

पिछले दिनों दिल्ली के यमुना तटों पर छठ पर्व के मौके पर रासायनिक झाग के बीच सूर्य को अर्घ्य देती महिला श्रद्धालुओं की तस्वीरों ने पूरे देश को विचलित किया। तंत्र की काहिली देखिए कि पर्व के दौरान भी श्रद्धालुओं को प्रदूषण मुक्त पानी वाले घाट नहीं मिल सके। लेकिन अब यमुना के पानी को जहरीले रसायनों वाले झाग से मुक्त करने के दावे किए जा रहे हैं। यह विडंबना ही है कि हजारों करोड़ रुपये खर्च करने के बाद यमुना और मैली हो गई है। मैली यमुना फैक्ट्री मालिकों और लोगों की आपराधिक लापरवाही तथा तंत्र की काहिली की दास्तां बयां करती है। यही वजह है कि पिछले दिनों देश की शीर्ष अदालत ने यमुना नदी में गिरने वाले 520 नालों और सफाई के सरकारी प्रयासों पर सवाल उठाए हैं। विडंबना यही है कि जब तक कोई राजनीतिक दल विपक्ष में होता है, तब तक अपनी सुविधा के हिसाब से यमुना की सफाई पर सवाल उठाता है, लेकिन जब वही राजनीतिक दल सत्ता में आता है तो खामोशी ओढ़ लेता है। बहरहाल, पिछले कई दशकों से यमुना के प्रदूषित होने का प्रश्न पर्यावरण प्रदूषण से जुड़ी सार्वजनिक बहसों के केंद्र में रहा है। लेकिन राजनीतिक दलों के लिए यह चुनाव की दृष्टि से सुविधा का मुद्दा ही रहा है। विपक्ष में हैं तो यमुना की सफाई को मुद्दा बनाया जाता है। सत्ता में आते ही चुप्पी साध ली जाती है। जाहिर है, इसकी सफाई के लिए ईमानदार प्रयास होते ही नहीं। यदि होते तो यमुना की यह दुर्दशा ही न होती।

मौलिक सवाल यही है कि यदि यमुना की सफाई में हजारों करोड़ रुपये खर्च हुए हैं तो यमुना मैली की मैली क्यों है? आज वह दुनिया की सबसे प्रदूषित नदियों में क्यों शामिल है? सवाल सरकारों की इच्छाशक्ति का भी है। यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने यमुना की दुर्दशा पर लगातार सवाल उठाए हैं। शीर्ष अदालत ने सख्त नाराजगी जताते हुए कहा कि यमुना की सफाई पर हजारों करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद प्रदूषण पहले के मुकाबले और कैसे बढ़ गया है? वह भारी-भरकम राशि कहां गई, जो सफाई पर खर्च की गई थी? आखिर क्या वजह है कि नदी का पानी उपयोग लायक नहीं रह गया? सुप्रीम कोर्ट ने इस बात का भी उल्लेख किया कि गंदा पानी ले जाने वाले 520 नाले यमुना में क्यों गिराए जा रहे हैं? कोर्ट ने प्रश्न किया कि जिन विभागों की जिम्मेदारी यमुना में गंदे नालों को जाने से रोकने की थी, उन्होंने क्या किया? यही वजह है कि अदालत ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से कहा है कि राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और जनपदों में यमुना में गिरने वाले नालों की निगरानी की जाए। कोर्ट ने यमुना की सफाई के मुद्दे पर राजनीतिक दलों की सुविधा की राजनीति पर प्रश्न उठाए। अदालत ने इस मुद्दे पर सरकारों और राजनीतिक दलों को इच्छाशक्ति दर्शाने की नसीहत भी दी। बहरहाल, तंत्र की नाकामी के साथ-साथ नागरिक भी गैर-जिम्मेदार व्यवहार के लिए दोषी हैं। नागरिकों को आने वाली पीढ़ियों के भविष्य के लिए यमुना को साफ करने का बीड़ा उठाना चाहिए।

# संतुलित विकास की सोच से ही बच सकती है दुनिया

> मोटे तौर पर इस बदलाव के पीछे मनुष्य का लालच और समृद्धि हासिल करने की उसकी चाहत काम कर रही है। उन्नीसवीं सदी की औद्योगिक क्रांति के पहले तक पूरी दुनिया में संतुलित उपभोग का सिद्धांत काम करता था। औद्योगीकरण के बढ़ते कदम के साथ इस सोच में कमी आई।

देश अभी सूखे के दुष्प्रभाव से निबटने की कोशिश कर ही रहा था कि महज एक हफ्ते के भीतर बंगाल की खाड़ी से उठे दो-दो तूफानों ने इसके तटीय इलाकों में कहर बरपा गया। तकनीकी विकास की वजह से तूफानों की पूर्व सूचना के चलते सरकारों ने एहतियाती उपाय कर लिए, इस वजह से बहुत ज्यादा जानी नुकसान नहीं हुआ, लेकिन तटीय इलाकों के बुनियादी ढांचे, बिजली व्यवस्था आदि को भारी पैमाने पर नुकसान पहुंचाने में सफल रहा। अर्नब जहां 28-29 अक्टूबर को आया तो दो नवंबर को मुरासू कहर बनकर उभरा। इतिहास में कम ही मौके ऐसे आए होंगे, जब सिर्फ एक हफ्ते के भीतर दो-दो तूफान आए। इन दोनो तूफानों ने ना सिर्फ माली नुकसान पहुंचाया, बल्कि मौसम चक्र को भी बदलकर रख दिया। दोनों के असर से उत्तर भारत तक के मौसम में बदलाव दिखने लगा है। करीब डेढ़ दशक से उत्तर भारत में देर से दस्तक देने वाला ठंड का मौसम कुछ पहले ही आ गया है।विगत कुछ दशकों से भारत ही नहीं दुनिया के मौसम चक्र में बदलाव दिख रहा है। इसकी वजह से वातावरण का तापमान बढ़ रहा है, बारिश का चक्र या तो कमजोर पड़ रहा है या फिर अचानक ही किसी इलाके में तीव्र हो जा रहा है। इसके चलते जहां वनस्पतियों की जहां कुछ प्रजातियां नष्ट हो रही हैं, वहीं जंतु जगत के कार्यकलाप, आदत और अस्तित्व में परिवर्तन नजर आने लगे हैं। इसका असल फसल चक्र और उनकी पैदावार पर भी पड़ रहा है। अव्वल तो दुनिया को इन बदलावों से चिंतित होना चाहिए, विश्व परेशान भी दिखता है, लेकिन इस बदलाव को थामने की वैश्विक स्तर पर जैसी संजीदा कोशिश



होनी चाहिए, नहीं हो रही है।इसे भी पढ़ें: दाल-तेल-दूध-चीनी सब महंगा हो रहा...क्या सच में आर्थिक आपदा की कगार पर भारत? विदेशी धरती से राहुल ने अब फोड़ा कौन सा नया बम! मोटे तौर पर इस बदलाव के पीछे मनुष्य का लालच और समृद्धि हासिल करने की उसकी चाहत काम कर रही है। उन्नीसवीं सदी की औद्योगिक क्रांति के पहले तक पूरी दुनिया में संतुलित उपभोग का सिद्धांत काम करता था। औद्योगीकरण के बढ़ते कदम के साथ इस सोच में कमी आई। लेकिन उदारीकरण के तेज बढ़ते कदमों की वजह से दुनिया में उपभोगवाद को बढ़ावा। जैसे-जैसे उपभोग की संस्कृति बढ़ती गई, उत्पादन की मांग बढ़ती गई। उत्पादन के चलते प्रकृति का दोहन बढ़ा, ऊर्जा की मांग बढ़ी। इस पूरी प्रक्रिया में प्रकृति और सभ्यता के बीच संतुलन गड़बड़ाना शुरू हुआ। जिसका असर जलवायु परिवर्तन के रूप में दिख रहा है। महात्मा गांधी बहुत पहले इस व्यवस्था को लेकर दुनिया को चेता चुके थे। उपभोगवाद को नियंत्रित रखने की कल्पना उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तिका हिंद स्वराज में की है। 1909 में लिखी इस पुस्तिका में गांधी ने लिखा है, "हम देखते हैं कि मन एक बेचैन पक्षी है; जितना अधिक इसे मिलता है, उतना ही यह चाहता है और असंतुष्ट रहता है। हम जितना अधिक अपने जुनून में लिप्त होते हैं, वे उतने ही बेलगाम होते जाते हैं। इसलिए, हमारे पूर्वजों ने हमारे भोग-विलास की एक सीमा तय की। उन्होंने देखा कि खुशी काफी हद तक एक मानसिक स्थिति थी। एक आदमी जरूरी नहीं कि इसलिए खुश हो क्योंकि वह अमीर या दुखी है। आखिरकार, वह गरीब है। अमीरों को अक्सर दुखी और गरीबों को खुश देखा जाता है। लाखों लोग हमेशा गरीब रहेंगे। यह सब देखते हुए, हमारे पूर्वजों ने हमें विलासिता और सुख से दूर रखा।"

आज दुनिया ने शहरीकरण और औद्योगीकरण को विकास का पैमाना मान लिया है। दोनों ने ही हमारे जीवन में उपभोगवाद को बढ़ावा दिया है। इसकी वजह से हमारी जलवायु में कई तरह के बदलाव आ रहे हैं। इसका सबसे स्पष्ट संकेत यह है कि दुनिया गर्म हो रही है। वैज्ञानिकों को यह बात उपग्रहों, मौसम संबंधी गुब्बारों, थर्मामीटरों, मौसम केंद्रों और अन्य स्रोतों से जुटाए गए सबूतों से पता चली है। 1880 के बाद से, विश्व के औसत तापमान में लगभग एक डिग्री सेल्सियस यानी करीब 1.7 डिग्री फ़ारेनहाइट की वृद्धि हुई है। अगर शहरीकरण और औद्योगीकरण केंद्रित उपभोगवाद यूं ही जारी रहा तो अनुमान है कि 2050 तक वैश्विक तापमान में लगभग 1.5 डिग्री सेल्सियस यानी करीब 2.7 डिग्री फ़ारेनहाइट और साल 2100 तक 2.4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है। नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार, 1960 के दशक से वैश्विक औसत वार्षिक तापमान में लगातार वृद्धि हुई है। इसके आंकड़ों के अनुसार, 20वीं सदी के बाद से सबसे गर्म रहे 20 वर्षों में से 19 वर्ष सिर्फ 2001 के बाद के हैं। आशंका है कि भविष्य में आने वाला सबसे ठंडा वर्ष भी, 20वीं सदी के सबसे गर्म वर्ष की तुलना में अधिक गर्म होगा।

विस्कॉन्सिन में तापमान और वर्षा में आए बदलावों का पता लगाने के लिए, यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन-मैडिसन के वैज्ञानिकों ने 'नेशनल क्लाइमेटिक डेटा सेंटर' द्वारा पूरे राज्य के नेटवर्क से जुटाए गए तापमान रिकॉर्ड का विश्लेषण किया है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि 1950 के दशक के बाद से विस्कॉन्सिन का तापमान 2 डिग्री फ़ारेनहाइट बढ़ गया है, साथ ही यहाँ बारिश में 4.5 इंच यानी करीब 14 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। इसमें सबसे ज़्यादा तापमान सर्दियों में बढ़ा है, जबकि वर्षा में सबसे अधिक वृद्धि गर्मियों के दौरान हुई है।

स्क्रिप्स इंस्टीट्यूट ऑफ ओशनोग्राफी के डॉ. चार्ल्स डेविड कीलिंग द्वारा शुरू की गई वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड की दैनिक रिकॉर्डिंग से पता चलता है कि वातावरण में उपलब्ध कार्बन डाइऑक्साइड में घटत-बढ़त होती रही है। जाहिर है कि इसका असर भी मौसम चक्र पर पड़ रहा है। दरअसल कार्बन डाइऑक्साइड का संबंध प्रकाश संश्लेषण से जुड़ा है। वसंत के मौसम में जब पौधे बढ़ते हैं, तो वे हवा से कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं और सूर्य की ऊर्जा का उपयोग करके उसे कार्बन में बदल देते हैं, साथ ही ऑक्सीजन छोड़ते हैं। वहीं, पतझड़ के मौसम में जब पौधे नष्ट होते हैं, तो वे कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर इसकी मात्रा में बढ़त दिखती है। मौसमी बदलावों के अलावा कीलिंग के अध्ययन रिपोर्ट से पता चलता है कि समय के साथ कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में भी वृद्धि हो रही है। उनके अध्ययन के अनुसार, 1958 में जहां इसकी उपस्थिति 313 पार्ट्स प्रति मिलियन थी, वहीं 30 मार्च 2020 तक बढ़कर यह 415 प्रति मिलियन हो गई। कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में हुई इस वृद्धि को 'कीलिंग कर्व' कहा जाता है। इन अध्ययनों से पता चलता है कि साल 1900 तक, कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर जहां स्थिर और लगभग 150 से 280 प्रति मिलियन के बीच था, वहीं 1900 के दशक की शुरुआत में, $CO_2$ का स्तर बहुत तेज़ी से बढ़ने लगा। आज, यानी 120 साल बाद, इसका स्तर औद्योगिक क्रांति से पहले की तुलना में 40 प्रतिशत अधिक है। साफ है कि जब तक दुनिया इसके प्रति नहीं चेतेगी, मौसम में बदलाव का चक्र नहीं रूकेगा। इससे सभ्यता का भविष्य भी खतरे में होगा। इसलिए जरूरी है कि प्रकृति से सामंजस्य के साथ संतुलित विकास के नजरिए से दुनिया आगे बढ़े। लेकिन लाख टके का सवाल यह है कि क्या दुनिया इस तरह सोचने को तैयार है?

## सरोकार

# मेहनत की रोटी में अमृत, बेईमानी के पकवान में पीड़ा

धन-दौलत और वैभव से किसी व्यक्ति की वास्तविक महानता का आकलन नहीं किया जा सकता। इंसान की असली पहचान उसके विचारों, व्यवहार और कमाई के तरीकों से होती है। किसी के पास महलों जैसी हवेली हो, पकवानों से सजी थाली हो और सुख-सुविधाओं के तमाम साधन हों, लेकिन यदि उसकी संपत्ति दूसरों का हक छीनकर जुटाई गई है तो उसका वैभव भी खोखला है। इसके विपरीत, मेहनत की कमाई से जुटाई गई सूखी रोटी भी अनमोल होती है। उसमें ईमानदारी का स्वाद और आत्मसम्मान का सुख छिपा होता है। श्री गुरु नानक देव जी के जीवन से जुड़ा एक प्रसंग इसी गहरी सीख को प्रस्तुत करता है। ..कहा जाता है कि एक बार गुरु नानक देव जी अपनी यात्राओं के दौरान एक गांव में पहुंचे। वहां उनकी मुलाकात भाई लालो नामक एक साधारण बढ़ई से हुई। भाई लालो बेहद सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। वे लकड़ी का काम करके अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, लेकिन उनके विचार बहुत ऊंचे थे। वे मेहनत को ही जीवन का सबसे बड़ा धर्म मानते थे। किसी के सामने हाथ फैलाने के बजाय अपनी मेहनत से दो वक्त की रोटी जुटाना उन्हें अधिक प्रिय था। प्रभु के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा और सेवाभाव ने गुरु नानक देव जी का मन जीत लिया।

.गुरु जी ने भाई लालो के घर ठहरना स्वीकार कर लिया। यह जानकर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी सीमित सामर्थ्य के बावजूद गुरु जी की सेवा में कोई कमी नहीं रखी। उसके घर में न तो महंगे बर्तन थे और न ही स्वादिष्ट व्यंजनों की भरमार, लेकिन जो भोजन उपलब्ध था, उसमें प्रेम, श्रद्धा और सच्चाई का भाव था। वह दिनभर मेहनत करके जो कुछ कमाता, उसी से अपने परिवार का गुजारा करता था। गुरु जी उसके घर में रहकर उसकी सादगी और ईमानदारी से प्रभावित हुए। ..जब यह समाचार इलाके के धनी और प्रभावशाली व्यक्ति मलिक भागो तक पहुंचा तो वह हैरान रह गया। उसे यह बात स्वीकार नहीं थी कि एक महान संत किसी गरीब बढ़ई के घर ठहरें। उसके मन में धन और सामाजिक प्रतिष्ठा का अहंकार था। वह स्वयं को गांव के प्रतिष्ठित लोगों में गिनता था और चाहता था कि संत-महात्मा उसके यहां आएं, उसके आतिथ्य को स्वीकार करें तथा उसकी संपन्नता की प्रशंसा करें।

.मलिक भागो ने गुरु नानक देव जी को अपने यहां भव्य भोज के लिए आमंत्रित किया। उसने सोचा कि तरह-तरह के पकवानों से सजी थाली देखकर गुरु जी उसके निमंत्रण को अवश्य स्वीकार कर लेंगे। लेकिन गुरु नानक देव जी ने उसके यहां भोजन करने से मना कर दिया। उस समय गुरु जी भजन-कीर्तन कर रहे थे और उनके शिष्य भाई मरदाना रबाब बजा रहे थे। निमंत्रण ठुकराए जाने से मलिक भागो का अहंकार आहत हो गया। वह क्रोध में गुरु जी के पास पहुंचा और बोला, 'आखिर आपने मेरे निमंत्रण को क्यों अस्वीकार किया? क्या मेरे घर का भोजन किसी गरीब बढ़ई के घर के भोजन से भी गया-बीता है? मेरे यहां आपके स्वागत के लिए हर प्रकार के पकवान तैयार हैं।'

.गुरु नानक देव जी ने उसकी बातों का शांतिपूर्वक उत्तर देने के बजाय उसे एक ऐसा सत्य दिखाने का निर्णय लिया, जिसे वह जीवनभर याद रख सके। उन्होंने मलिक भागो से कहा कि वह अपने घर से भोजन लेकर आए। साथ ही भाई लालो को भी उसके घर से भोजन लाने के लिए कहा गया। कुछ देर बाद दोनों के सामने भोजन प्रस्तुत किया गया। एक ओर मलिक भागो के घर से आए स्वादिष्ट और महंगे पकवान थे, तो दूसरी ओर भाई लालो की मेहनत की कमाई से तैयार साधारण रोटी और साग।

.गुरु नानक देव जी ने दोनों के भोजन को अपने हाथों में लिया और निचोड़ने लगे। मान्यता के अनुसार, मलिक भागो के पकवानों से रक्त की बूंदें टपकने लगीं, जबकि भाई लालो की सूखी रोटी से दूध की धारा बहने लगी। यह दृश्य देखकर वहां मौजूद लोग आश्चर्यचकित रह गए। मलिक भागो के चेहरे पर भी हैरानी और बेचैनी दिखाई देने लगी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस घटना का क्या अर्थ है। ..तब गुरु नानक देव जी ने उसे समझाया कि भाई लालो की रोटी मेहनत और ईमानदारी से कमाई गई है। उसमें किसी गरीब का शोषण नहीं है, किसी का अधिकार नहीं छीना गया है और न ही किसी के साथ अन्याय किया गया है। इसलिए उसकी साधारण रोटी भी पवित्र है। दूसरी ओर मलिक भागो के पकवानों के पीछे गरीबों की मेहनत का अनुचित लाभ उठाने और दूसरों का हक मारने की कमाई छिपी हुई है। भोजन कितना भी स्वादिष्ट और कीमती क्यों न हो, यदि उसे जुटाने का तरीका गलत है तो वह मनुष्य के जीवन में वास्तविक सुख नहीं ला सकता।

..गुरु जी ने आगे समझाया कि धन कमाना गलत नहीं है, लेकिन धन कमाने का रास्ता ईमानदारी और न्याय से जुड़ा होना चाहिए। किसी की मजबूरी का फायदा उठाकर, किसी की मेहनत का उचित मूल्य दिए बिना या दूसरों के अधिकार छीनकर संपत्ति जुटाना मनुष्य के चरित्र को कमजोर करता है। इंसान को अपनी मेहनत पर विश्वास रखना चाहिए और जो कुछ प्राप्त हो, उसमें संतोष करना सीखना चाहिए। ..गुरु नानक देव जी की बातें सुनकर मलिक भागो का अहंकार चूर हो गया। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और वह लज्जित होकर सिर झुकाने लगा। इस घटना ने उसे समझा दिया कि समाज में सम्मान धन के प्रदर्शन से नहीं, बल्कि अच्छे कर्मों से मिलता है। ..यह प्रसंग आज के दौर में भी हर व्यक्ति को आत्ममंथन करने की प्रेरणा देता है। जीवन में धन और सफलता की आवश्यकता सभी को होती है, लेकिन इनके पीछे अपनी नैतिकता और ईमानदारी को खो देना उचित नहीं है। दूसरों की मेहनत का सम्मान करना, जरूरतमंदों का अधिकार न छीनना और अपनी कमाई से संतोषपूर्वक जीवन बिताना ही सच्चे मानवीय मूल्यों की पहचान है।

# आज भी जीवन को दिशा देने वाले शाश्वत विचार

सिख धर्म के संस्थापक एवं प्रथम गुरु नानक देव जी का जन्म 15 अप्रैल, 1469 ई. को राय भोई की तलवंडी (वर्तमान में ननकाना साहिब) में हुआ था। माता तृप्ता तथा पिता मेहता कालू के घर जन्मा यह अलौकिक बालक बचपन से ही धीर-गंभीर स्वभाव का था। किसी शब्द या अक्षर का गहन विश्लेषण करना हो अथवा प्रचलित रस्मों को तार्किक आधार पर परखना, ये सभी गुण उनमें बाल्यकाल से ही विद्यमान थे। गुरु नानक जी युवावस्था की दहलीज़ पर पहुंचने से पूर्व ही तत्कालीन समाज की दुर्दशा भली-भांति भांप चुके थे। सर्वत्र अंधविश्वास, पाखंड तथा कट्टरता का बोलबाला था। जाति प्रथा, वर्ण व्यवस्था, छुआछूत जैसी कुप्रथाएं चरम पर थीं। निरंकुश शासक जनता का शोषण कर रहे थे।

अभिशप्त जीवन से उबारने का एकमात्र उपाय था ज्ञानदीप प्रज्वलित करके सुसुप्तप्रायः जनसामान्य को झकझोरना, दिशाज्ञान देने के साथ-साथ स्वयं उदाहरण बनकर उन्हें अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस प्रदान करना। यह महत्त्वपूर्ण कार्य करने का बीड़ा उठाया विचारशील, समाज-सुधारक एवं संत प्रकृति के स्वामी गुरु नानक जी ने। इस संदर्भ में उनके द्वारा की गई चार उदासियां (धर्म-यात्राएं) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भारत के अलावा मक्का, अरब, तिब्बत तथा अफ़ग़ानिस्तान जैसे दूरस्थ क्षेत्रों की यात्राएं करके जहां उन्होंने सत्य, प्रेम तथा भाईचारे का संदेश दिया, वहीं पाखंडों और अंधविश्वासों का खंडन भी किया।गुरु नानक जी की शिक्षाएं तीन मुख्य सिद्धांतों पर आधारित हैं—नाम जपो, कीरत करो और वंड छको। 'नाम जपो' से आशय निरंतर ईश्वर से जुड़े रहना तथा सबका भला मांगना है। 'एक ओंकार' में आस्था रखने वाले बाबा नानक जी के अनुसार, 'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।'

'कीरत करो' से अभिप्राय ईमानदारीपूर्वक आजीविका कमाकर परिवार का पालन-पोषण करना है। 'वंड छको' का अर्थ है मिल-बांटकर खाना तथा अपनी कमाई का कुछ हिस्सा ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए अर्पित करना। सामाजिक समानता के पक्षधर गुरुजी के विचार में जन्म से किसी की जाति ऊंची या नीची नहीं होती; ऊंच-नीच तो अच्छे और बुरे कर्मों के माध्यम से तय होती है। उनके शब्दों में, 'न हम हिंदू, न मुसलमान।' इसी सोच के तहत 'लंगर' की शुरुआत की गई, जिसमें किसी भी वर्ण, धर्म, जाति या समुदाय से संबद्ध लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। बाबा नानक जी के कथनानुसार, मुक्ति या आध्यात्मिकता मात्र संन्यासी बनने अथवा गुफ़ाओं में बैठने से नहीं मिलती। गृहस्थ जीवन में सामाजिक दायित्व निष्ठापूर्वक निभाकर भी इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। वे कमल की ही भांति सांसारिक कीचड़ से निर्लिप्त रहकर प्रभु-भक्ति करने पर बल देते हैं।

दरअसल, पांच शताब्दी पूर्व दी गईं ये शिक्षाएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। 'पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु' कहकर गुरु नानक जी ने पवन, पानी और धरती को क्रमशः गुरु, पिता तथा माता जैसा महत्त्वपूर्ण दर्ज दिया। इसके बावजूद स्वार्थी मानव नहीं संभला। नतीजतन, अनमोल प्राकृतिक तत्त्व आज चिंताजनक स्तर तक विषाक्त हो चुके हैं।

भेदभाव की जिस खाई को पाटना बाबाजी के जीवन का उद्देश्य रहा, वह आज भी कहीं-न-कहीं समाज में अपनी जगह बनाए हुए है। जिस नारी के सम्मान में बाबाजी 'सो किउ मंदा आखिए जितु जम्हि राजान' का पुख़्ता स्वर बुलंद करते रहे, वह आज भी लैंगिक पक्षपात, शोषण आदि से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाई है। क्षुधाकुल पेट भरने को ही 'सच्चा सौदा' मानने वाले गुरु नानक जी के देश में, दुर्भाग्यवश, आज ऐसे सौदागरों की कोई कमी नहीं, जो मुनाफ़ाख़ोरी के लोभ में लोगों का जीवन तक दांव पर लगा देते हैं। निहित स्वार्थों के चलते मज़हब और जाति के नाम पर लोगों को लड़ाना आधुनिक राजनीति में आम देखा जा सकता है।

भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में हमने स्वयं को इस क़दर मसरूफ़ कर डाला है कि हमारे भीतर बसा 'अनहद नाद' भूले से भी हमें सुनाई नहीं पड़ता। इसी कारण बात-बेबात संबंध दरक रहे हैं। समाज में अनाचार बढ़ रहा है, अनैतिकता हावी हो रही है तथा अशांति और अवसाद गहराते जा रहे हैं। कुल मिलाकर, युग भले ही बदल चुका हो, परिस्थितियां कमोबेश वही हैं। ऐसे में सामाजिक कायाकल्प करने हेतु जगतगुरु नानक जी सरीखे महापुरुषों द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का गहनतापूर्वक मनन और अनुसरण करना समय की मांग बन जाता है।

## नजरिया

# कार्तिक पूर्णिमा पर पुष्कर में उतरती है तीर्थों की दिव्यता



उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती

राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित पुष्कर धाम भारतीय सनातन परंपरा का ऐसा अनुपम तीर्थ है, जहां धर्म, अध्यात्म, प्रकृति और लोकजीवन एक साथ अपनी भव्यता का परिचय देते हैं। कार्तिक मास आते ही इस प्राचीन तीर्थ की छटा पूरी तरह बदल जाती है। सरोवर के घाटों पर श्रद्धालुओं की भीड़, मंदिरों में गूंजते मंत्र, आरती के स्वर और जल में झिलमिलाते असंख्य दीप ऐसा वातावरण बनाते हैं, जिसमें हर ओर भक्ति और आस्था का अनुभव होता है। इसी पावन अवसर पर आयोजित होने वाला विश्व प्रसिद्ध पुष्कर मेला धार्मिक महत्ता के साथ राजस्थान की समृद्ध लोकसंस्कृति और पारंपरिक पशुपालन व्यवस्था का भी जीवंत प्रतीक है। यहां आने वाला प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में इस सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत से जुड़ जाता है।

सनातन धर्म में कार्तिक का महीना अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। इस अवधि में भगवान विष्णु की आराधना, पवित्र नदियों और सरोवरों में स्नान, दीपदान, व्रत तथा दान-पुण्य का विशेष महत्व बताया गया है। इसी धार्मिक परंपरा के अंतर्गत पुष्कर में प्रतिवर्ष विशाल मेले का आयोजन होता है। इस वर्ष मेला 24 नवंबर तक चलेगा। इसका प्रमुख धार्मिक आयोजन देवोत्थान एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक यानी 20 से 24 नवंबर के बीच हो रहा है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन होने वाला महास्नान और दीपदान इस आयोजन का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस अवसर पर देश के विभिन्न राज्यों से लाखों श्रद्धालु पुष्कर पहुंचकर पवित्र सरोवर में आस्था की डुबकी लगाते हैं। पुष्कर का धार्मिक महत्व प्राचीन धर्मग्रंथों और पौराणिक मान्यताओं में विशेष रूप से वर्णित है। हिंदू परंपरा में प्रयाग को तीर्थराज कहा गया है, जबकि पुष्कर को तीर्थों का गुरु मानकर सम्मान दिया गया है। ऐसी मान्यता है कि चारधाम की यात्रा के बाद भी पुष्कर सरोवर में स्नान किए बिना तीर्थयात्रा पूर्ण नहीं मानी जाती। यही वजह है कि श्रद्धालुओं के मन में इस तीर्थ के प्रति विशेष श्रद्धा है। साधु-संतों, तपस्वियों और गृहस्थ श्रद्धालुओं के लिए पुष्कर सदियों से आध्यात्मिक साधना और धार्मिक अनुष्ठानों का प्रमुख केंद्र रहा है। पुष्कर सरोवर की उत्पत्ति को लेकर एक प्राचीन पौराणिक कथा प्रचलित है। मान्यता के अनुसार, सृष्टि की रचना से पूर्व भगवान ब्रह्मा ने यज्ञ के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश करते हुए अपने हाथ में कमल पुष्प धारण किया था। वह कमल पुष्प जिस स्थान पर गिरा, वहां जल की धारा प्रकट हुई और इसी से पुष्कर सरोवर का निर्माण हुआ। कमल पुष्प से उत्पन्न होने के कारण इस स्थान को पुष्कर नाम मिला। तभी से यह क्षेत्र भगवान ब्रह्मा की तपोभूमि और प्रमुख तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। अर्द्धचंद्राकार स्वरूप में फैला यह सरोवर अपनी पौराणिक महत्ता और प्राकृतिक सुंदरता के कारण देश-विदेश के श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

सरोवर के चारों ओर बने 52 घाट इसकी धार्मिक पहचान को विशेष स्वरूप प्रदान करते हैं। गऊघाट, वराहघाट, ब्रह्मघाट और जयपुर घाट प्रमुख घाटों में शामिल हैं। प्रत्येक घाट से जुड़ी अपनी धार्मिक मान्यता और परंपरा है। श्रद्धालु यहां स्नान, पूजा, तर्पण और दान-पुण्य करते हैं। पितरों की शांति के लिए भी अनेक लोग इन घाटों पर धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराते हैं। संध्या के समय सरोवर के किनारे होने वाली आरती का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। घंटियों की ध्वनि, शंखनाद, मंत्रोच्चार और दीपों की रोशनी पूरे वातावरण को भक्तिमय बना देती है। जयपुर घाट से सूर्यास्त का दृश्य विशेष रूप से मनमोहक दिखाई देता है। जब डूबते सूर्य की लालिमा सरोवर के जल पर बिखरती है, तब प्रकृति और अध्यात्म का अद्भुत संगम दिखाई देता है। सरोवर के मध्य स्थित छतरी इसकी सुंदरता में चार चांद लगाती है। कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक के पांच दिनों को धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इन्हें भीष्म पंचक कहा जाता है। शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार, इस अवधि में सभी तीर्थों, पवित्र नदियों और देवी-देवताओं का विशेष निवास पुष्कर में होता है। भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उपस्थिति से इस समय तीर्थ की महत्ता और बढ़ जाती है। इन पांच दिनों में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं को विशेष पुण्य प्राप्त होने की मान्यता है।

मालिक जयेश जगशी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी है, न्याय क्षेत्र मुंबई), सहसंपादकः सुजीत मिश्रा ('दै.'राष्ट्रीय स्वाभिमान 'में सभी लोग सहयोगात्मक और अवैतनिक तौर पर कार्यरत हैं)
● **आर.एन.आई.:MAHHIN/2008/24084** ● ईमेलः rastriyaswabhiman@gmail.com ● भ्रमणध्वनि क्र. +919224733113

# सूखा प्रभावित किसानों के परिवारों को संभालने के लिए पूरी ताकत से जुटे शिवसैनिक : एकनाथ शिंदे

मुंबई। महाराष्ट्र में सूखे की गंभीर स्थिति के बीच प्रभावित किसानों और उनके परिवारों को राहत पहुंचाने के लिए शिवसेना ने अपने जनप्रतिनिधियों को पूरी ताकत से मैदान में उतरने का निर्देश दिया है। उपमुख्यमंत्री और शिवसेना के मुख्य नेता एकनाथ शिंदे ने पार्टी के नगराध्यक्षों से कहा कि सूखा प्रभावित क्षेत्रों में किसानों की परेशानियों को केवल प्रशासनिक समस्या मानकर न देखा जाए, बल्कि उनके परिवारों को भी इस कठिन दौर से उबारने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएं। उन्होंने विशेष रूप से उन परिवारों की मदद पर जोर दिया, जिनके सामने आर्थिक संकट के कारण बच्चों की पढ़ाई, पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक आयोजनों को पूरा करना मुश्किल हो रहा है। शिंदे ने किसानों की चिंता दूर करने के लिए स्थानीय जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों और कीर्तनकारों को भी साथ लेकर काम करने का सुझाव दिया। उन्होंने भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार और नगर विकास विभाग की ओर से नगर परिषदों को आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाएगा।

यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान में सोमवार को आयोजित शिवसेना के नगराध्यक्षों की बैठक में नगर परिषद क्षेत्रों के विकास कार्यों, प्रशासनिक अड़चनों और स्थानीय स्तर पर सामने आ रही समस्याओं पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक में पार्टी के निर्वाचित नगराध्यक्षों, उपनगराध्यक्षों और नगरसेवकों की भूमिका तथा आगामी विकास योजनाओं को लेकर भी विचार-विमर्श किया गया। इस दौरान शिंदे ने कहा कि नगर परिषद चुनाव में शिवसेना के 63 नगराध्यक्षों के साथ उपनगराध्यक्षों और हजारों नगरसेवकों का निर्वाचित होना पार्टी के इतिहास की बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि यह सफलता केवल राजनीतिक जीत नहीं, बल्कि जनता की ओर से सौंपी गई जिम्मेदारी भी है। अब जनप्रतिनिधियों को अपने-अपने क्षेत्रों में लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना होगा और विकास कार्यों को प्राथमिकता देनी होगी।

शिंदे ने कहा कि नगर परिषदों की वास्तविक स्थिति, उनकी जरूरतों और प्रशासनिक कठिनाइयों को समझने के लिए यह बैठक महत्वपूर्ण रही। स्थानीय निकायों के सामने कई तरह की चुनौतियां होती हैं। कहीं बुनियादी सुविधाओं का विस्तार जरूरी है तो कहीं विकास परियोजनाओं को पूरा करने के लिए प्रशासनिक और आर्थिक सहयोग की आवश्यकता



है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि नगर विकास विभाग नगर परिषदों की समस्याओं को गंभीरता से लेकर आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा। उनका कहना था कि जनप्रतिनिधियों को जनता से लगातार संपर्क बनाए रखना चाहिए, ताकि स्थानीय समस्याओं की जानकारी समय पर मिल सके और उनका समाधान भी तेजी से किया जा सके।

इसी उद्देश्य से शिंदे ने 'शासन आपके द्वार' अभियान की तर्ज पर शिवसेना की ओर से 'नगराध्यक्ष आपके द्वार' अभियान शुरू करने की घोषणा की। इस अभियान के तहत नगराध्यक्ष अपने क्षेत्र के घर-घर जाकर नागरिकों से संवाद करेंगे, उनकी समस्याएं सुनेंगे और संबंधित विभागों के माध्यम से उनके समाधान का प्रयास करेंगे। शिंदे ने कहा कि नगराध्यक्षों को केवल कार्यालयों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें जनता के बीच जाकर वास्तविक स्थिति समझनी होगी। नागरिकों को अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं के समाधान के लिए बार-बार सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें, इसके लिए जनप्रतिनिधियों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि शहर का विकास किसी एक दल या संगठन की जिम्मेदारी नहीं है। इसलिए अन्य राजनीतिक दलों के नगरसेवकों के साथ मतभेद भुलाकर सभी को साथ लेकर काम करना चाहिए। स्थानीय राजनीति से ऊपर उठकर शहर के समग्र विकास को प्राथमिकता देने की जरूरत है।

बैठक में सूखा प्रभावित किसानों के मुद्दे पर शिंदे ने विशेष संवेदनशीलता दिखाने की अपील की। उन्होंने कहा कि संकट के समय किसानों और उनके परिवारों को अकेला नहीं छोड़ा जाना चाहिए। स्थानीय जनप्रतिनिधि अपने क्षेत्रों में प्रभावित परिवारों की स्थिति का पता लगाएं और उनकी जरूरतों के अनुसार मदद पहुंचाने के लिए आगे आएं। उन्होंने चिंतित किसानों की मानसिक स्थिति को देखते हुए कीर्तनकारों के माध्यम से उनकी काउंसलिंग कराने का सुझाव भी दिया। उनका मानना था कि सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र से जुड़े लोग किसानों के परिवारों तक पहुंचकर उन्हें मानसिक संबल दे सकते हैं। सूखे और आर्थिक कठिनाइयों के कारण जिन किसानों के बच्चों की शादियां तय होने के बाद भी रुक गई हैं, उनका उल्लेख करते हुए शिंदे ने कहा कि ऐसे परिवारों की मदद की जिम्मेदारी शिवसेना ने उठाई है। उन्होंने इसे केवल आर्थिक सहायता का विषय नहीं, बल्कि संकट के समय परिवारों के साथ खड़े होने का दायित्व बताया।

युवाओं के भविष्य और उनकी प्रतिभा को आगे बढ़ाने के विषय पर भी बैठक में चर्चा हुई। शिंदे ने नगर परिषदों को अपने क्षेत्रों में अध्ययन केंद्र, खेल मैदान और युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर उपलब्ध कराने वाली परियोजनाएं शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शहरों में युवाओं के लिए ऐसी सुविधाएं विकसित की जानी चाहिए, जहां वे पढ़ाई के साथ खेल और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में भी आगे बढ़ सकें। इसी क्रम में उन्होंने घोषणा की कि 'नमो उद्यान' की तर्ज पर नगर परिषद क्षेत्रों में खेल मैदानों के विकास के लिए एक करोड़ रुपये का फंड उपलब्ध कराया जाएगा। इस राशि से स्थानीय स्तर पर खेल सुविधाओं को बेहतर बनाने और युवाओं को अभ्यास तथा प्रतियोगिताओं के लिए उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराने की दिशा में काम किया जा सकेगा।

शिंदे ने पर्यावरण संरक्षण और ऐतिहासिक धरोहरों की देखभाल का विषय भी उठाया। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडल की ओर से राज्य के किलों पर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किले महाराष्ट्र के इतिहास और गौरव के प्रतीक हैं, इसलिए उनकी स्वच्छता और संरक्षण के लिए जनभागीदारी जरूरी है। शिवाजी महाराज के समय की व्यवस्थाओं से प्रेरणा लेते हुए किलों पर संविधान दिवस मनाने की बात भी उन्होंने कही। इस पहल के जरिए ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति सम्मान के साथ संविधान के मूल्यों और नागरिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा।

बैठक के दौरान शिंदे ने पार्टी पदाधिकारियों को कामकाज की शैली में बदलाव लाने की सलाह देते हुए कहा कि उन्हें कम बोलना और अधिक काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जनता भाषणों और घोषणाओं से अधिक जमीन पर दिखाई देने वाले परिणामों को महत्व देती है। इसलिए नगराध्यक्षों और नगरसेवकों को अपने क्षेत्र में विकास कार्यों की नियमित समीक्षा करनी चाहिए और नागरिकों के बीच अपनी उपलब्धियों के बजाय उनके काम के प्रभाव को सामने रखना चाहिए।

इस दौरान उपमुख्यमंत्री ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि राहुल गांधी विदेश जाकर भारत की छवि खराब करते हैं और देश की अर्थव्यवस्था को 'डेड इकोनॉमी' बताते हैं। शिंदे ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत के विकास की सराहना की है। उन्होंने एक सर्वेक्षण का हवाला देते हुए कहा कि अमेरिका और चीन के बाद भारत दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। इस तरह बैठक में जहां एक ओर नगर परिषदों के विकास, किसानों की सहायता और युवाओं के लिए सुविधाएं बढ़ाने की रूपरेखा पर चर्चा हुई, वहीं राजनीतिक मुद्दों पर भी शिंदे ने अपनी बात रखी।

# पुलिस झंडा दिवस पर पुलिस आयुक्त मोहित अग्रवाल ने फहराया पुलिस ध्वज, दी सलामी

वाराणसी। पुलिस झंडा दिवस के अवसर पर सोमवार, 23 नवंबर 2026 को पुलिस आयुक्त कमिश्नरेट वाराणसी मोहित अग्रवाल ने पुलिस लाइन में पुलिस ध्वज फहराकर सलामी दी। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुलिस ध्वज के गौरवशाली इतिहास, ऐतिहासिक महत्व और पुलिस बल की समृद्ध परंपराओं की जानकारी दी।

पुलिस आयुक्त ने बताया कि 23 नवंबर 1952 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उत्तर प्रदेश पुलिस एवं प्रांतीय सशस्त्र कांस्टेबुलरी (पीएसी) को उनकी



उत्कृष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस ध्वज प्रदान किया था। यह सम्मान प्राप्त करने वाला उत्तर प्रदेश पुलिस देश का पहला राज्य पुलिस बल बना था।

उन्होंने कहा कि पुलिस ध्वज पुलिस बल के साहस, शौर्य, त्याग, समर्पण, अनुशासन और कर्तव्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह ध्वज पुलिस की गौरवशाली विरासत के साथ-साथ जनता की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था बनाए रखने और जनसेवा के संकल्प को भी दर्शाता है।

इस अवसर पर पुलिस आयुक्त ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुलिस ध्वज की गरिमा और प्रतिष्ठा बनाए रखते हुए पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी, अनुशासन एवं संवेदनशीलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में उपस्थित पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पुलिस ध्वज के सम्मान और गौरवशाली परंपराओं को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा जनसेवा के प्रति पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य करने का संकल्प लिया।

# काशी में भक्तों ने की षोडश विष्णु प्रदक्षिणा दर्शन पूजन यात्रा, 16 विष्णु विग्रहों के किए दर्शन

वाराणसी। काशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा समिति, अस्सी के तत्वावधान में कार्तिक शुक्ल पक्ष त्रयोदशी के अवसर पर रविवार को काशी में षोडश विष्णु प्रदक्षिणा दर्शन-पूजन यात्रा का श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ आयोजन किया गया। यात्रा का शुभारंभ सुबह 8 बजे दशाश्वमेध घाट के समीप प्रयाग घाट स्थित शूलटांकेश्वर माधव मंदिर में विधिवत संकल्प के साथ हुआ। हर-हर महादेव और श्रीहरि के जयघोष के बीच श्रद्धालुओं ने क्रमवार काशी के 16 प्रमुख विष्णु विग्रहों का दर्शन-पूजन किया।

यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने प्रयाग



माधव विष्णु, श्वेत माधव विष्णु, मीर घाट स्थित गंगा केशव विष्णु, ललिता घाट स्थित वीर माधव विष्णु, सिंधिया घाट स्थित भृगु केशव विष्णु, मंगला गौरी मंदिर स्थित बिंदु माधव विष्णु, पंचगंगा घाट स्थित गोपाल माधव एवं काल माधव विष्णु, चौखंभा स्थित लक्ष्मी नृसिंह विष्णु, राजमंदिर स्थित गोपी गोविंद विष्णु, लाल घाट स्थित नर-नारायण विष्णु, बद्रीनारायण घाट स्थित त्रिविक्रम विष्णु, त्रिलोचन महादेव मंदिर स्थित प्रह्लाद नृसिंह एवं प्रह्लाद केशव विष्णु तथा प्रह्लाद घाट स्थित क्षीर सागर आदि केशव विष्णु के दर्शन किए।

यात्रा के अंतिम चरण में भक्तों ने मां अन्नपूर्णा मंदिर स्थित श्री महाविष्णु तथा श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में श्री ज्ञान माधव विष्णु के दर्शन-पूजन किए। इसके पश्चात बाबा श्री काशी विश्वनाथ के दर्शन कर व्यास पीठ के समीप संकल्प छोड़ने के साथ इस पावन यात्रा का विधिवत समापन हुआ।

यात्रा का संचालन यात्रा संचालक एवं सूचना मंत्री उमाशंकर गुप्ता के नेतृत्व में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस धार्मिक यात्रा में विजय चौबे, मृत्युंजय मालवीय, ऋचा पांडेय, हिमांशु, शांतनु, अजय वाजपेयी, दीपांकर गुप्ता, अनीश आनंद मिश्रा, ध्रुवी परीख, अम्बेश आनंद झा, आचार्य संतोष, राजेंद्र चौरसिया सहित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने सहभागिता की।

## संजय नगर कॉलोनी में संगीतमय श्रीरामचरितमानस अखंड पाठ, हवन-पूजन एवं भंडारे का आयोजन संपन्न

वाराणसी। हर वर्ष की परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी रामचरितमानस समिति की ओर से संजय नगर कॉलोनी स्थित चौका घाट के ईवीई मंगलकरण हनुमान मंदिर में संपूर्ण श्रीरामचरितमानस अखंड पाठ, हवन-पूजन, प्रसाद वितरण एवं भंडारे का आयोजन श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मंदिर परिसर को सुगंधित फूलों की मालाओं और रंग-बिरंगी विद्युत झालरों से आकर्षक ढंग से सजाया गया। आचार्य गोपाल पाठक के मार्गदर्शन में वैदिक ब्राह्मणों ने मंत्रोच्चार के बीच अखंड पाठ का शुभारंभ किया। संगीतमय श्रीरामचरितमानस पाठ के दौरान छप्पन भोग अर्पित किया गया तथा भगवान की भव्य आरती की गई। पाठ की पूर्णाहुति के बाद विधिवत




हवन-पूजन संपन्न हुआ। इसके पश्चात श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण किया गया और मंदिर परिसर में आयोजित भंडारे में बड़ी संख्या में भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर संजय महाराज ने कहा कि श्रीरामचरितमानस का पाठ मनुष्य के जीवन को सरल और सुगम बनाने का मार्ग दिखाता है। हवन-पूजन से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। रामचरितमानस का पाठ करने से सभी तीर्थों के पुण्य की प्राप्ति होती है। जनकल्याण और समाज में सकारात्मकता के प्रसार के लिए समय-समय पर मानस पाठ, हवन एवं पूजन का आयोजन आवश्यक है।

कार्यक्रम में अशोक तिवारी, अंजनी कुमार शर्मा, अवधेश वर्मा, लल्ला पांडेय, अशोक चौधरी सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

# 'महाविष्णु की महायात्रा' का 12 साल का संकल्प, 90 करोड़ लोगों तक पहुंचेंगे भगवान विष्णु के दर्शन

मुंबई। भगवान विष्णु की भक्ति और सनातन आध्यात्मिक चेतना को देशभर में जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से श्रीनारायण भक्ति पंथ ने 'महाविष्णु की महायात्रा' नाम से एक विशेष अभियान शुरू करने की घोषणा की है। संतश्री लोकेशानंदजी महाराज के नेतृत्व में निकलने वाली इस यात्रा का लक्ष्य देश के सभी 28 राज्यों और 8 केंद्रशासित प्रदेशों के प्रत्येक जिले तक पहुंचना है। लगभग 12 वर्षों तक चलने वाले इस अभियान के माध्यम से 90 करोड़ लोगों को भगवान विष्णु के दिव्य दर्शन कराने का संकल्प लिया गया है। यात्रा का शुभारंभ 26, 27 और 28 फरवरी को मुंबई के महालक्ष्मी रेसकोर्स




से होगा। इस अवसर पर मुंबई के विभिन्न क्षेत्रों में श्रद्धालुओं को भगवान विष्णु के दर्शन का अवसर मिलेगा। हाल ही में संतश्री लोकेशानंदजी महाराज ने मुंबई में दिव्य सत्संग और विशेष बैठक आयोजित कर श्रद्धालुओं से इस अभियान से जुड़ने का आह्वान किया।

इस महायात्रा का प्रमुख आकर्षण करीब 35 हजार किलो वजनी पंचधातु से निर्मित भगवान विष्णु की विशाल प्रतिमा होगी। आयोजकों के अनुसार, प्रतिमा को देश के अलग-अलग हिस्सों तक पहुंचाने के लिए विशेष रथ तैयार किया गया है। महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के शहादा स्थित श्रीश्रीनारायणपुरम तीर्थ में भगवान विष्णु की 21 टन वजनी ठोस प्रतिमा भी स्थापित है। आयोजकों का दावा है कि दोनों प्रतिमाओं को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्थान मिला है। संतश्री लोकेशानंदजी महाराज के अनुसार, यह यात्रा श्रद्धालुओं के लिए चलते-फिरते तिरुपति बालाजी मंदिर के दर्शन जैसा अनुभव होगी और इसके दर्शन से 68 तीर्थों के पुण्य का लाभ प्राप्त होगा।

संतश्री लोकेशानंदजी महाराज का कहना है कि सनातन परंपरा में भगवान विष्णु को सृष्टि का पालनहार और कण-कण में व्याप्त चेतना माना गया है। उनके अनुसार, भगवान विष्णु अजन्मा, अनादि और अनंत हैं, जबकि उनके अवतार विशेष समय और उद्देश्य के लिए प्रकट होते हैं। वह मानते हैं कि आज धर्म के क्षेत्र में मूल स्वरूप और उसकी वास्तविक भक्ति को लेकर भ्रम बढ़ रहा है। 'महाविष्णु की महायात्रा' का उद्देश्य लोगों को भगवान विष्णु के मूल स्वरूप और उनकी भक्ति से जोड़ना है। महाराज ने श्रद्धालुओं से अपने घरों में श्रीनारायण के स्वरूप की स्थापना कर उन्हें आध्यात्मिक केंद्र बनाने का आह्वान किया है। श्रीनारायण भक्ति पंथ के प्रवर्तक लोकेशानंदजी महाराज के अनुसार, उनका संकल्प करोड़ों लोगों को भगवान के दर्शन कराकर उन्हें 'नर से नारायण' बनने की आध्यात्मिक यात्रा की ओर प्रेरित करना है।

# देव दीपावली पर जगमगाएंगे काशी के घाट, नमो से अस्सी घाट तक तैयारियां पूरी

वाराणसी। विश्व प्रसिद्ध देव दीपावली पर्व को भव्य और दिव्य स्वरूप देने के लिए नगर निगम प्रशासन ने तैयारियां लगभग पूरी कर ली हैं। नमो घाट से लेकर अस्सी घाट तक सभी प्रमुख घाटों पर आकर्षक प्रकाश व्यवस्था की गई है। रंग-बिरंगी झालर लाइटों और हाईमास्ट फ्लड लाइटों से घाट जगमगा उठे हैं। दूधिया रोशनी में नहाए गंगा घाटों की छटा देखते ही बन रही है।

देव दीपावली की तैयारियों को अंतिम रूप देने के लिए नगर आयुक्त शाश्वत त्रिपुरारि ने सोमवार को जल निगम एवं प्रकाश विभाग के अधिकारियों के साथ नमो घाट से अस्सी घाट तक विभिन्न घाटों का स्थलीय




निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने नमो घाट स्थित शौचालय का भी निरीक्षण कर आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

नगर आयुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि देव दीपावली के दौरान घाटों पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की आवाजाही को देखते हुए स्वच्छता व्यवस्था में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। शौचालयों की नियमित सफाई, हैंडवॉश, तौलिया सहित अन्य आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने के साथ विशेष स्वच्छता अभियान चलाने के निर्देश दिए गए।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि पर्व के दौरान किसी भी घाट या संपर्क मार्ग पर सीवर ओवरफ्लो, जलभराव अथवा गंदगी की समस्या नहीं होनी चाहिए। इसके लिए जल निगम और सफाई विभाग की टीमों को विशेष रूप से सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं।

निरीक्षण के दौरान अपर नगर आयुक्त दुर्गेश मिश्रा, जल निगम एवं प्रकाश विभाग के अधिकारी तथा अन्य संबंधित कर्मचारी मौजूद रहे। अपर नगर आयुक्त ने बताया कि घाटों और संपर्क मार्गों की साफ-सफाई तथा प्रकाश व्यवस्था से जुड़े अधिकांश कार्य पूरे कर लिए गए हैं। शेष तैयारियां भी सोमवार रात तक हर हाल में पूरी कर ली जाएंगी।

# महानगर अध्यक्ष प्रदीप अग्रहरि ने पूर्व राज्यपाल कलराज मिश्र से की शिष्टाचार भेंट, जन्मदिन की दी शुभकामनाएं

वाराणसी। भाजपा महानगर अध्यक्ष प्रदीप अग्रहरि ने सोमवार, 23 नवंबर को वाराणसी के सर्किट हाउस में हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल एवं वरिष्ठ भाजपा नेता कलराज मिश्र से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान उन्होंने कलराज मिश्र को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए उनका आशीर्वाद प्राप्त किया और संगठनात्मक विषयों पर मार्गदर्शन लिया।

मुलाकात के दौरान काशी के समग्र विकास, संगठन की मजबूती और वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य सहित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। प्रदीप अग्रहरि ने महानगर में संचालित संगठनात्मक गतिविधियों और आगामी कार्ययोजनाओं की जानकारी भी पूर्व राज्यपाल को दी।



कलराज मिश्र ने अपने लंबे अनुभवों को साझा करते हुए संगठन की नीतियों और जनकल्याणकारी योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने पर जोर दिया। उन्होंने संगठनात्मक गतिविधियों को जनहित से जोड़ने तथा कार्यकर्ताओं के माध्यम से जनसेवा के कार्यों को आगे बढ़ाने के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन दिया।

इस अवसर पर स्थानीय राजनीति से जुड़े विभिन्न समसामयिक विषयों पर भी विचार-विमर्श हुआ। शिष्टाचार भेंट के दौरान चंद्रशेखर उपाध्याय, शशि मिश्रा सहित अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

हिन्दी दैनिक
# राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail com

04 मुंबई, मंगलवार, 24 नवम्बर 2026 महाराष्ट्र

epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

## पिंपरी-चिंचवड़ को फिर देश की अग्रणी महानगरपालिका बनाने का संकल्प : सुनेत्रा पवार

मुंबई/पुणे। पिंपरी-चिंचवड़ को एक बार फिर देश की अग्रणी और आर्थिक रूप से सशक्त महानगरपालिका बनाने के लिए विकास कार्यों को गति देनी होगी। इसके लिए प्रशासन, जनप्रतिनिधियों और संबंधित विभागों को सामूहिक जिम्मेदारी के साथ काम करना होगा। पूर्व उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने शहर के विकास को लेकर जो सपना देखा था, उसे साकार करना हम सभी का दायित्व है। महाराष्ट्र की उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार ने सोमवार को महानगरपालिका प्रशासन के साथ बैठक में यह बात कही। उन्होंने शहर में चल रही विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की और आगामी योजनाओं की जानकारी लेते हुए सभी कार्य निर्धारित समयसीमा में पूरे करने के निर्देश दिए।



बैठक में शहर की सफाई व्यवस्था और कचरा प्रबंधन से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी विस्तार से चर्चा हुई। मोशी कचरा स्थल पर हुई दुर्घटना को लेकर सुनेत्रा पवार ने चिंता जताई और इसे दुखद घटना बताया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए सुरक्षा के सभी आवश्यक उपाय किए जाएं। मोशी में कचरा ले जाने की प्रक्रिया बंद होने के बाद शहर से निकलने वाले कचरे के निस्तारण के लिए की गई वैकल्पिक व्यवस्था की भी उन्होंने जानकारी ली। उन्होंने स्पष्ट किया कि कचरा प्रबंधन शहर की प्राथमिक आवश्यकताओं में शामिल है और इस व्यवस्था पर वह स्वयं नजर रखेंगी। इसके साथ ही उन्होंने जल्द ही मोशी परियोजना का निरीक्षण करने की बात कही और अधिकारियों को परियोजना से संबंधित कार्य प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने का निर्देश दिया।

सुनेत्रा पवार ने शहर की संभावित आबादी वृद्धि को ध्यान में रखते हुए भविष्य की जरूरतों के अनुरूप बुनियादी सुविधाएं विकसित करने पर भी जोर दिया। राज्य के अलग-अलग हिस्सों में सूखे की स्थिति के कारण रोजगार और खेती-किसानी से जुड़े अवसरों की तलाश में लोगों के पिंपरी-चिंचवड़ की ओर पलायन करने की आशंका है। ऐसे में महानगरपालिका प्रशासन को अभी से तैयारी करनी होगी, ताकि आबादी बढ़ने पर नागरिक सुविधाओं पर अतिरिक्त दबाव न पड़े। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि पानी की उपलब्धता, आवास, स्वास्थ्य सेवाओं, स्वच्छता और अन्य जरूरी सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था पहले से सुनिश्चित की जाए। शहर की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए योजनाएं तैयार करने और उनके समयबद्ध क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बैठक में पर्यावरण संरक्षण और नदियों की स्वच्छता का मुद्दा भी प्रमुखता से उठा। उपमुख्यमंत्री ने पवना और इंद्रायणी नदियों में प्रदूषण रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाने तथा नदी पुनर्जीवन परियोजना को तेजी से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शहर के विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। नदियों को प्रदूषण से बचाने और उनके पुनर्जीवन के लिए संबंधित विभागों के बीच बेहतर समन्वय जरूरी है। इसके अलावा पिंपरी-चिंचवड़ के औद्योगिक महत्व को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र में नए निवेश आकर्षित करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने पर भी जोर दिया गया। इसके लिए उद्योगों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ कानून-व्यवस्था को मजबूत बनाए रखना आवश्यक बताया गया।

शहर की यातायात व्यवस्था और बुनियादी ढांचे से जुड़ी परियोजनाओं की समीक्षा के दौरान सुनेत्रा पवार ने नासिक फाटा से एलिवेटेड कॉरिडोर के निर्माण कार्य की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस परियोजना का काम अंतिम चरण में पहुंच चुका है और जल्द ही इसका उद्घाटन किया जाएगा। इस कॉरिडोर को शहर के यातायात ढांचे के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। बैठक में राज्य सरकार के स्तर पर लंबित पिंपरी-चिंचवड़ से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर भी चर्चा की गई।

## प्रदीप पूर्णेकर हत्याकांड में दो आरोपी फिर पुलिस हिरासत में, एसआईटी कर रही जांच

ठाणे। मानपाड़ा में उद्धव बालासाहेब ठाकरे शिवसेना गुट के मंडल प्रमुख प्रदीप पूर्णेकर की हत्या के मामले में ठाणे एसआईटी ने दो आरोपियों नितेश पवार और निखिल यादव को दोबारा हिरासत में लिया है। मामले में गिरफ्तार पांचों आरोपी न्यायिक हिरासत में हैं। पुलिस हत्या में इस्तेमाल हथियार और अन्य महत्वपूर्ण साक्ष्य जुटाने का प्रयास कर रही है।



गौरतलब है कि सितंबर में प्रदीप पूर्णेकर की उनके कार्यालय में गोली मारकर और चाकू से हमला कर हत्या कर दी गई थी। इस घटना के बाद ठाणे में भारी आक्रोश फैल गया था। विभिन्न स्थानों पर विरोध प्रदर्शन और रैलियां भी निकाली गई थीं। हत्या की जांच की गति को लेकर भी सवाल उठाए गए थे।

सूत्रों के अनुसार, शनिवार को नितेश पवार और निखिल यादव को आगे की पूछताछ के लिए पुलिस हिरासत में लिया गया था। हालांकि, एसआईटी प्रमुख एवं पुलिस उपायुक्त (अपराध) अमरसिंह जाधव ने एक दिन की हिरासत में कोई नई जानकारी मिलने की पुष्टि नहीं की है।

**सुप्रिया सुले से मिले मृतक के पुत्र**

इस मामले को लेकर रविवार सुबह राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की सांसद सुप्रिया सुले ठाणे के गडकरी रंगायतन में आयोजित कार्यक्रम में पहुंचीं। इस दौरान प्रदीप पूर्णेकर के पुत्र राम पूर्णेकर ने उनसे मुलाकात कर पिता की हत्या और जांच की स्थिति से अवगत कराया।

सुप्रिया सुले ने आश्वासन दिया कि मामले को लेकर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र दिया जाएगा और इस मुद्दे को विधानसभा में भी उठाया जाएगा।

## मुंबई सेंट्रल स्टेशन का नाम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के नाम पर रखने की मांग तेज

मुंबई। पश्चिम रेलवे के प्रमुख रेल टर्मिनलों में शामिल मुंबई सेंट्रल स्टेशन का नाम बदलकर महामानव डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के नाम पर रखने की मांग एक बार फिर उठी है। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आठवले) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय सामाजिक न्याय राज्यमंत्री रामदास आठवले ने इस संबंध में अपनी मांग दोहराते हुए कहा कि मुंबई के महत्वपूर्ण रेलवे टर्मिनलों में शामिल मुंबई सेंट्रल का अब तक नामकरण नहीं हुआ है। ऐसे में इस स्टेशन को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के नाम से जाना जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह मांग केवल किसी राजनीतिक संगठन की पहल नहीं, बल्कि रिपब्लिकन पार्टी की ओर से कई वर्षों से उठाया जा रहा विषय है। आठवले के मुताबिक, मुंबई सेंट्रल का ऐतिहासिक और रेल परिवहन की दृष्टि से विशेष महत्व है, इसलिए इसे डॉ. आंबेडकर के नाम से जोड़ना उचित होगा।

आठवले ने इस मांग के समर्थन में मुंबई के अन्य प्रमुख रेलवे टर्मिनलों के नाम परिवर्तन का उदाहरण भी दिया। उन्होंने कहा कि मध्य रेलवे के पूर्ववर्ती विक्टोरिया टर्मिनस यानी वीटी का नाम बदलकर छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस किया जा चुका है। इसी तरह तिलक नगर स्थित टर्मिनल को लोकमान्य तिलक टर्मिनस नाम दिया गया है। इसके बावजूद पश्चिम रेलवे के प्रमुख टर्मिनल मुंबई सेंट्रल का नाम अब तक नहीं बदला गया है। उनका कहना है कि जब मुंबई के अन्य महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों को महापुरुषों और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के नाम से पहचान दी गई है, तो मुंबई सेंट्रल का नाम भी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के नाम पर रखा जाना चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने मुंबई सेंट्रल स्टेशन की रेल परिवहन में भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि यहां से पश्चिम रेलवे की लंबी दूरी की कई एक्सप्रेस ट्रेनें देश के अलग-अलग हिस्सों के लिए रवाना होती हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों से मुंबई आने वाले यात्रियों के लिए भी यह स्टेशन महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार है। बड़ी संख्या में यात्री इस टर्मिनल के माध्यम से मुंबई पहुंचते हैं और यहां से अपने गंतव्य की ओर जाते हैं। ऐसे प्रमुख स्टेशन को डॉ. आंबेडकर के नाम से जोड़ने से उनके विचारों और योगदान को व्यापक पहचान मिलने की बात आठवले ने कही।

## जिला स्तरीय युवा महोत्सव में युवाओं ने दिखाई प्रतिभा विजेता संभागीय प्रतियोगिता में करेंगे ठाणे का प्रतिनिधित्व

ठाणे। महाराष्ट्र शासन के खेल एवं युवा सेवा संचालनालय, पुणे तथा जिला खेल अधिकारी कार्यालय, ठाणे के संयुक्त तत्वावधान में रविवार, 22 नवंबर 2026 को कल्याण स्थित सेक्रेड हार्ट स्कूल में जिला स्तरीय युवा महोत्सव 2026-27 का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया।



कार्यक्रम में जिला खेल अधिकारी सुवर्णा बारटक्के ने महोत्सव के उद्देश्य बताते हुए कहा कि सरकार का लक्ष्य युवाओं की छिपी प्रतिभा को मंच प्रदान करना, उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना और कौशल विकास के अवसर उपलब्ध कराना है। महोत्सव का उद्घाटन जिला सूचना अधिकारी मनोज सुमन शिवाजी सनप ने किया। इस अवसर पर स्कूल की वरिष्ठ माध्यमिक विभाग प्रमुख सजीता नायर, जिला युवा पुरस्कार विजेता प्रणव देसाई तथा सुनील म्हस्कर सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

प्रतियोगिताओं की शुरुआत से पहले मनोज सनप ने शहीद कैप्टन विनायक गोरे पर आधारित देशभक्ति से ओतप्रोत एकल नाट्य प्रस्तुति दी। उनकी प्रस्तुति ने उपस्थित युवाओं और विद्यार्थियों को प्रभावित किया तथा देशभक्ति एवं समाजसेवा का संदेश दिया।

महोत्सव में कविता लेखन, चित्रकला, लोकगीत, लोकनृत्य, नुक्कड़ नाटक और पीपीटी प्रस्तुति जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। ठाणे जिले के युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और सांस्कृतिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को शासन के नियमानुसार पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। जिला स्तर पर चयनित विजेता प्रतिभागी 27 नवंबर 2026 को रायगढ़ जिले के पनवेल स्थित आदि क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के नाट्यगृह में आयोजित संभागीय युवा महोत्सव में ठाणे जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे।

जिला खेल अधिकारी सुवर्णा बारटक्के सहित उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने विजेताओं को आगामी प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दीं। आयोजन में सेक्रेड हार्ट स्कूल प्रबंधन एवं सहयोगी संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। महोत्सव ने युवाओं को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ आत्मविश्वास बढ़ाने का अवसर प्रदान किया।

## 'आविष्कार 2026' राष्ट्रीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी का उत्साहपूर्ण समापन, 324 तस्वीरों ने मोहा दर्शकों का मन

ठाणे। ठाणे महानगरपालिका और फोटो सर्कल सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 27वीं ठाणे महापौर कप राष्ट्रीय फोटोग्राफी प्रतियोगिता एवं 'आविष्कार 2026' प्रदर्शनी का रविवार, 22 नवंबर को उत्साहपूर्ण समापन हुआ। तीन हाथ नाका, परबवाड़ी स्थित हिंदू हृदय सम्राट बालासाहेब ठाकरे कलादालन में आयोजित चार दिवसीय प्रदर्शनी में देशभर से प्राप्त 7,018 तस्वीरों में से चयनित 324 उत्कृष्ट तस्वीरें प्रदर्शित की गईं।




प्रदर्शनी में प्रकृति, वन्यजीव, सामाजिक जीवन, मानवीय संवेदनाओं, संस्कृति और त्योहारों के विविध रंगों को कैमरे के माध्यम से आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया।

समापन समारोह में सांसद नरेश म्हस्के और विधायक माधवी संजय नाइक उपस्थित रहे। सांसद म्हस्के ने फोटोग्राफरों की प्रतिभा की सराहना करते हुए कहा कि तस्वीरों में कैद पल इतने जीवंत हैं कि हर तस्वीर पुरस्कार की हकदार लगती है। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन शहर की कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। विधायक माधवी नाइक ने आयोजन में मनपा अधिकारियों के सहयोग की सराहना की।

इस अवसर पर प्रसिद्ध फोटोग्राफर विजय बारसे, वरिष्ठ फोटोग्राफर चारुदत्त कोली, उपायुक्त मीनल पलांडे और फोटो सर्कल सोसाइटी की अध्यक्ष अंजू मानसिंह सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

प्रतियोगिता में स्ट्रीट फोटोग्राफी में किशोर दास (कोलकाता), नेचर एवं वाइल्डलाइफ में डॉ. पराग नलावडे (भायंदर), लैंडस्केप एवं वाटरस्केप में शिबाशीष शाह (कोलकाता), फेस्टिवल में उदय शंकर पाल (हैदराबाद) तथा क्रिएटिव कलर्स में राजेश धर (कोलकाता) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को अतिथियों के हाथों सम्मानित किया गया।

## टोरेंट पावर का 'संवाद' कैंप 25 और 27 नवंबर को, बिजली समस्याओं का होगा समाधान

ठाणे। टोरेंट पावर की ओर से भिवंडी, शील, मुंब्रा और कलवा के बिजली उपभोक्ताओं की समस्याओं के समाधान तथा महावितरण अभय योजना 2026-27 की जानकारी देने के लिए 'संवाद' विशेष कैंप आयोजित किया जाएगा।



भिवंडी के उपभोक्ताओं के लिए 25 नवंबर को चाविंद्रा स्थित अर्श कस्टमर केयर सेंटर में तथा शील, मुंब्रा और कलवा के उपभोक्ताओं के लिए 27 नवंबर को शील स्थित अरिहंत कस्टमर केयर सेंटर में कैंप लगाया जाएगा। दोनों कैंप सुबह 10 से शाम 5 बजे तक चलेंगे।

कैंप में टोरेंट पावर के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ महावितरण (MSEDCL) के अधिकारी भी मौजूद रहेंगे। यहां महावितरण अभय योजना 2026-27 के तहत पात्र उपभोक्ताओं को योजना की पात्रता, बकाया भुगतान और अन्य प्रक्रियाओं की जानकारी दी जाएगी। इसके अलावा बिजली बिल में गड़बड़ी, लंबित आवेदन, बिजली आपूर्ति, विजिलेंस और अन्य समस्याओं पर भी उपभोक्ता सीधे वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा कर सकेंगे।

टोरेंट पावर ने सभी संबंधित उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे 'संवाद' कैंप में पहुंचकर अपनी समस्याओं का समाधान कराएं और अभय योजना का लाभ उठाने के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त करें।

## जिलाधिकारी डॉ. श्रीकृष्ण पांचाल की अध्यक्षता में होगा सशस्त्र सेना ध्वज दिवस निधि संग्रह अभियान का शुभारंभ

ठाणे। जिला सैनिक कल्याण कार्यालय, ठाणे की ओर से सशस्त्र सेना ध्वज दिवस 2026 निधि संग्रह अभियान का उद्घाटन बुधवार, 9 दिसंबर 2026 को दोपहर 12 बजे जिलाधिकारी कार्यालय स्थित प्लानिंग भवन ऑडिटोरियम में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाधिकारी डॉ. श्रीकृष्ण पांचाल करेंगे।

इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से गणमान्य नागरिक एवं अधिकारी शामिल होंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ किया जाएगा। इसके पश्चात उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं नागरिकों से सशस्त्र सेना ध्वज दिवस निधि के लिए योगदान एकत्रित किया जाएगा।

मेजर प्रांजल जाधव (सेवानिवृत्त), सैनिक कल्याण अधिकारी, ठाणे एवं पालघर ने नागरिकों से अपील की है कि वे इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर सैनिकों और उनके परिवारों के कल्याण के लिए आयोजित निधि संग्रह अभियान में सहभागी बनें। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बुधवार सुबह 11:45 बजे तक पहुंचने का आग्रह किया गया है।

## महाराष्ट्र में दो वरिष्ठ IPS अधिकारियों को पुलिस महानिदेशक पद पर पदोन्नति, आशुतोष डुंबरे और देवेन भारती शामिल

ठाणे। महाराष्ट्र शासन के गृह विभाग ने 20 नवंबर 2026 को जारी शासनादेश के तहत भारतीय पुलिस सेवा (IPS) के दो वरिष्ठ अधिकारियों को पुलिस महानिदेशक (DGP) श्रेणी में पदोन्नति प्रदान की है। पदोन्नति पाने वालों में ठाणे शहर के पुलिस आयुक्त आशुतोष डुंबरे और बृहन्मुंबई के पुलिस आयुक्त देवेन भारती शामिल हैं। शासनादेश के अनुसार, दोनों अधिकारियों को उनकी वर्तमान पदस्थापना पर ही पदोन्नति दी गई है। प्रशासनिक प्रक्रिया में इसे 'इन-सिटू प्रमोशन' कहा जाता है। यह आदेश महाराष्ट्र पुलिस अधिनियम, 1951 की धारा 22N के प्रावधानों के तहत जारी किया गया है। महाराष्ट्र शासन के सह सचिव सुग्रीव संभाजी धपाटे के डिजिटल हस्ताक्षर से जारी इस आदेश के बाद दोनों अधिकारियों को पुलिस महानिदेशक श्रेणी का पद प्राप्त हुआ है।

## ठाणे में घटती हरियाली पर पर्यावरण प्रेमियों की चिंता, मुख्यमंत्री सचिवालय ने ज्ञापन पर्यावरण विभाग को भेजा

**आर एस नेटवर्क। दिनेश चंद्र रावल**

ठाणे। तेजी से बढ़ते सीमेंट-कंक्रीट के निर्माण के बीच ठाणे शहर की मुख्य सड़कों से हरियाली लगातार कम होने पर निसर्गसत्ता एनवायरनमेंट सोसाइटी ने चिंता जताई है। संगठन ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को ज्ञापन सौंपकर शहर की प्रमुख सड़कों पर वैज्ञानिक तरीके से स्थानीय प्रजातियों के पेड़ लगाने और उनके संरक्षण की मांग की है। मुख्यमंत्री सचिवालय ने इस ज्ञापन को आगे की कार्रवाई के लिए पर्यावरण विभाग को भेज दिया है। संगठन ने स्टेशन रोड, राम मारुति रोड और गोखले रोड सहित प्रमुख मार्गों पर योजनाबद्ध तरीके से देसी पेड़ लगाने तथा हरित सड़कें विकसित करने की मांग की है।

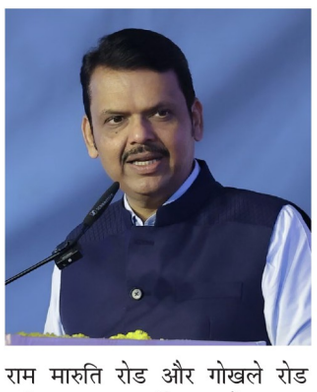

संगठन का आरोप है कि ठाणे महानगरपालिका पेड़ लगाने और मौजूदा पेड़ों की देखभाल के मामले में अपेक्षित गंभीरता नहीं दिखा रही है। डॉ. प्रशांत सिनकर ने कहा कि बढ़ते कंक्रीट निर्माण, घटते हरित क्षेत्र, बढ़ते तापमान और प्रदूषण को देखते हुए शहर में पेड़ों की संख्या बढ़ाना बेहद जरूरी है। वहीं, राजीव डाके ने कहा कि महानगरपालिका को वृक्षारोपण के साथ मौजूदा पेड़ों के संरक्षण के लिए भी प्रभावी कदम उठाने चाहिए।

संगठन ने मांग की है कि केवल पौधे लगाकर जिम्मेदारी पूरी न मानी जाए, बल्कि उनके नियमित रखरखाव, पानी की व्यवस्था और संरक्षण के लिए अलग व्यवस्था बनाई जाए। इसके लिए विशेष अभियान चलाकर समयबद्ध कार्ययोजना तैयार करने की भी मांग की गई है।

मुख्यमंत्री सचिवालय द्वारा ज्ञापन पर्यावरण विभाग को भेजे जाने के बाद अब महानगरपालिका की कार्रवाई पर नजरें टिकी हैं। संगठन ने उम्मीद जताई है कि शहर के विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण को भी प्राथमिकता दी जाएगी और ठाणे की प्रमुख सड़कों को फिर से हरित स्वरूप प्रदान करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे।